

;Gtf]if s'df/ ld>

hGd:yfg	M	hgsk'/wfd-&
hGd ldlt	M	@)#&÷%÷@*
c:yfO{ a;f]af;	M	afnfh' xfO{6, sf7df8f}+
lzIff	M	la=la=P;=
e|d0f	M	g]kfn cf} ef/t
?lr	M	;flxTo-n]vg, ;dfh ;]jf
;+nUgtf	M	dwoIf, d}lyn gjo'jf ;flxTokl/ifb\
:yfoL kQf	M	hgsk'/wfd-&, lh/f] dfO{n
	M	kmf]g M)$!–%@$#&$
	M	E-mail: santosh_58@hotmail.com
k|sfzf]Gd'v s[lt;a	M	;':ldtf -c+u|]hL pkGof;_ ofb] ;Fe/n hLjg -d}lynL pkGof;_

उदास मौन

d}lynL syf ;ª\u|x



n]vs
;Gtf]if s'df/ ld>

k|sfzs
g/]z ld>

k|sfzs M g/]z ld>

hgsk'/ wfd–$, ljBfklt rf}s

Aoa:yfks M g/]z ld>

Ol86 M 8f= /fh]Gb| k|;fb ljdh cfwL/]Gb| k|]dL{

sDKo'6/ M Home Computer

M aflrkmn, kf6g9f]sf, kmf]g M@!!))$)

M E-mail: homedesktop@info.com.np

klxn ;+:s/0f M @)^)

k|lt M !%)!

d'No M

d'b|s M uf}/L z+s/ /fpt (UPS)

dxf]Q/L–#,dxf]Q/L

b'zAb

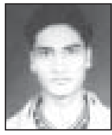
gjf] lbt syfsf/ >L ;Gtf]if s'df/ ld> lnlvt syf ;es k|sfzgf]d'v kf08'lnlk b]vn . syfsf/ >L ;Gtf]ifs d}lynL k|]d;F xd kl/lrt 5L . d}lynL cfGbf]ngd] ;+rUg gjo'jfkL9Ls cu|k+lQmd] 7f9 >L ;Gtf]if g]kfns /fhwfgLd] d}lynL efiff, ;flxTo, ;+:s[tL snfs >L ;Ddfg– ;d[l4 x]t' ;dlk{t eP ;';+ul7t ;+3if{ sP/xnfx cl5 . g]kfns ;Dk"0f{ d}lyn k|]dLs]+ lxgs/ lk7 7f]safs rfxL . xd lxgs dft[efiff–k|]d ;f+u7lgs sf}zn, b'b{Eo ;+3if{zLntf cf ;Dk'0f{–efjs cg'z+;f s/}t5L .

k|:t't syf;ed] lszf]/;'ne efj'stf, sNkgfzLntf, z}nlks cgu9tf jf Aofs/l0fs q'l6 cflb xf]Otx"F o'u,hLjg cf d}lyn ;dfhs ef]un ofyfy{ ;F pkhn cg'e'tL cf ts/f k|:t't s/afs snf ;+r]tgfs emns cjZo e]6}t cl5 . ;[hg ;fwgf 5}s cf >L ;Gtf]if ;fwgf–/t 5ly . t]F lxgs snf–l;l4 k|lt xd ljZj:t 5L . cfufdL s[lt ;ed] cf] cfcf]/a];L k|f}9 laifoj:t' cf snf–kl/kfss kl/ro bo ;stfx, ;] ljZjfz cl5 . xd/ z'esfdgf Û

dxfbzdL,
b]jLyfg,hgsk'/wfd
!%÷^÷@)^)

8f= /fh]Gb| k|;fb ljdh

k|sfzss]+ tkm{;F



hflx ;F ;dfhs ljlqmtLd] ;'wf/ ca} cf ;dfhd] Ps6f gofF r]tgf cflahfO{ t]Fs]+ Ps6f c;n n]vlgo jf ;flxTo sxnhfO{5 . ;Gtf]if xd/ aRr]s ;fyL . x'gsf xd aRr] ;F snf k|lts] :g]x b]lvt cfla/xn5L . cf] kfFr]–5 au{d] kl9t a]/;F slatf cfbL lnv˜d] ?rL 5n}g . P;=Pn=;L= afb xd dfgjLsL ;+sfod] k9=u]nx'F cf cf] aflOfHo . ;flxTo ;[hgf tkm{ xd/ Wofg a8 sd d'bf cf] cf/ snf 5f]l/s n]vgd] laif];Wofg b]nfx . xd hlxof x'gsf e]6}5nLolg cf] xd/f h?/] ls5 glx ls5 ;'Ga} 5n}y . xF Pt] h?/ 5}s h] lwofk'tfs] ;'tfas] xf]o tF nf]lX ;'gflbcf]g cf kx'gs] lagf rfo lkof}g] k7fas] cl5 t d}lynL ;flxTo . dfq !Ü nf]s d}lynL ;flxTo lnv}5ly jf ;'gd] ?rL /v} 5ly . clx If]qs Ps6f sdhf]/L O{ 5}s h] n]vs h] lnv}5ly ;] n]vss] 6]a'nk/ jf l;/df t/d] w/fhfO5lg . O{ t lnvlgxf/ ;es efUos aft 5}s h] ljleGg ;+:yf ;e åf/f laleGg uf]i7L ;axs cfof]hgf xf]O5}s cf n]vss] ls5 jfrg s/afs d}sf e]6}5lg .

Ps lbg xd x'gsf sxlnog æls5 ;+u|x lsof glx k|sfzLt s/a}5] . æcf] xd/f hafa b]nfx æs/axL vr{ t afhæ a; xd/f b'g' ;fyLd] xF d] xF e]n} cf xd d}lynL efiffs lasfz x]t' sfh 7flgb]nx'F . cf]gf d}lynL efiffd] nf]s dfq dKkg b]v}5ly d'bf O{ ;]xf] b]vafs rfxL h] s]cf] ckgf ;F lgs xf]o t lgss] cfu'a9=n]n lk7 7f]lss˜ af6 5f]l/bL . cvg ts Pxg sfh sf7df08"d] cj:yLt d}lyn gjo"jf ;flxTo kl/ifb\ s] s/}t dfq b]vg] 5L .

>L ;Gtf]if s'df/ ld>s lnvn syf ;Fu|xd] dfq b'6f sfNklgs syf cl5 cf aFfls ;e jf:tjLs . clxs] ;fy x'gsf xd z'esfdgf b}5L h] cf] clxgf ;dfh k/ s6fIf df/}t lnv}t /x}y cf ckg efiffs] lasfz s/f}y . h] dfF ldlynf lxgsf ;gs k'ts] hGd bs˜ t[Kt e˜hPtL .

cGttM pbfz df]g syf ;+u|xs n]vss] dfF wd{snf b]jL cf afa'hL >L ga]Gb| ld> ;+u}x 5f]6 efO{ ;/f]h ld> lvnf8Ls] s[t1tf 1fkg s/}l5og . d}lynL ;flxTod] O{5f]6] lsof glx xf]O xd dfF ldlynf ;+u}x xd/ dfF k|dLnf ld> cf afa'hL >L ldlyn]z ld>s] r/g sdnd] r9a}l5olg .

PsfbzL
!(cflZjg,@)^)
laBfklt rf}s–$
hgsk'/ wfd

—g/]z ld>

;Gtf]ifs pbfz df]g

d}lynL ;flxTo ;[hgd] jt{dfg g]kfnL e'efus ztflAbof] k'"j{;Ful/dfob cf pNh]Vo ;xeflutf /x}t cfPn cl5 . Pvg's ;dod] ;Dk"0f{ d}lynL eflifs d'lZsn;F bz k|ltzt nf]s g]kfnd] /x}t cl5 . tyflk Plx0fods ;flxTosf/ nf]slg ckg ;lqmotf;F d}lynL ;flxTos e08f/s]F e/afd] a]z of]ubfg b˜/xn 5ly . Plx qmdd] ljleGGf ju{,pd]/,tyf dfgl;s ;f]rjfnf ;flxlTosj[Gb;F g]kfns d}lynL ;flxTos] lg/Gt/ sfFr,kfsn,8DxfPn, ljleGGf :t/s /rgflb e]6}t /xn}s cl5 . ts/] Ps s8=ls ?kd] o'jf ;flxTosf/ ;Gtf]if s'df/ ld> ckg klxn syf;Ëf|x æpbfz df]gæn˜s˜ k|:t't e]nfx cl5 .

sf7df08"s kl/;/d] ;Gtf]if d}lynL cfGbf]ngs Ps h'emf? AolSts ?kd] ckg ;lqmotf b]va}t cfla/xnfx cl5 . df]gd] cfPn ljrf/s]F tTsfn sfo{?k b]afsn]n O{ ;tt pBt b]v}n hfOt cl5 . a];L nfO–nk6 cf ;f]r–ljrf/d] ;db udfPa O{ plrt glx a'em}t 5ly . t]F ht˜ st]sf] ;flxTosf/ kf]ly afx/ s/afs lgof/]d] ckg k'/f hLjg u'hfl/ n}t 5ly tt˜ ;Gtf]if ax't sDd] ;dod] Ps ;Dk"0f{ kf]yL n˜s˜ k|:t't e˜u]nfx cl5 .

g]kfnd] xf]a˜jnf d}lynL ;DalGwt sf]gf] t/xs cfof]hg xf], ;Gtf]ifs]F k|foM ts/ hfgsf/L /x}t 5lg cf k|foM ;ed] lxgs ;lqmo ;xeflutf b]vn hfOt cl5 . ts/f cltl/St d}lynLs ;fË7lgs sfo{;ed] ;]xf] O{ gLs g]t[Tjstf{s ?kd] b]vn hf /xnf cl5 . lxgs O{ ljz]iftf;e d}lynL ;flxTod] lxgsf lg/Gt/ ;lqmo agf}g] /xtlg ;] xd/ ljZjf; cl5 .

g]kfn;F d}lynLd] syf lnvfOt tF v'a /xn}s cl5, d'bf k':tsfsf/ ?kd] xd/f hg}t ;Gtf]ifs æpbfz df]gæ u'?j/ 8f= wL/]Gb|s rfl/uf]6 syfs[lt cf jl/i6 ;flxTosf/ /fde/f]; sfkl8æ |d/æs tf]/f ;Ë] hPaf} /] s'haf s afb cfPn o'jf t'/s Psdfq syf ;+u|xs cl5 . syf ;e h] h]xg cl5 ts/ /;f:jfbg cf cfsng kf7sug s/a] s/tfx . xd/f ljZjf; cl5 h] pbfz df]g kf7ss df]gs]F pbfz glx s/tlg . xd/ z'esfdgf cl5 h] ;Gtf]ifs syfofqf rn}t /x}g cf lxgs clx syfs[lts] kf7ss e/k"/ l;g]x k|fKt xf]Og .

—wL/]Gb| k|]dL
@)^).)^.@@,sf]hu/f
sf7df08", g]kfn

sg]s Wbfg lbof}



lglZrt e˜s˜ sf]gf] sfhs] z'?jft s/afs n]n Ps6f ;d'xs cfjZoQmf k/}t cl5 . hflxd] snf, ;+:s[tL, ;flxTos] ;dj{wg cf ;+/If0fs] n]n lasfz k|tL tg,dg,cf wg :j+us] Ps6f ;d'x a'emjfnf sfyfsf/ ;Gtf]if s'df/ ld> 5f]6 ;dod] a8 a/sf pkNawL xf;Ln sPg] 5ly . hxfF ts xd/f a'emn cl5 O{ c;u/ sf7df08'd] cflas˜ slauf]li7,d}lyn gjo'jf ;flxTo kl/ifbs :yfkgf, s}lgxf/ >L ld> cfO km]/ Ps6f lgs sfh s/˜ hf/xn 5ly cf pm sfh cl5 d}lynL syf ;+u|xs k|sfzg . cf]gf xd/f a'emn cl5 h] syfsf/ dfq d}lynL glx alNs c+u|]hLd] syf ,slatf cf pkGof; ;]xf] lnv}5ly . d'bf ckg dft[efiff k|tL Pxg Wbfg b]lvs˜ xd x'gsf nuzL/ lgx'/fs cfb/ s/}l5olg .

Ps6f sxaL 5}sæ3/s v'§f dHu'tenf;F k'/f 3/ dHu't xf]Ot 5}s . æsyfsf/ ld> lglZrt e˜s˜ ;flxTo /rgf cf ;dfh k|tL ;dkL{t xf]afs sf/g ;F syf ;e ;dfhLs ?kd] lgs hsfF t}of/ e]n cl5 . o'jf syfsf/ >L ld> o'jfju{ pk/ lgs Jo+u s}; ;sn 5ly . cf clx ;Ëf|x d]sf syf h]gf wf]aLs]F ubxf cfbL kl9s s]cf] jf lsgsf] Pt] l;v e]6tlg h] cf] ckg k}/ k/ s'/x}/ glx rnf}tf .

j:t'tMsyf lgs hsfF t}of/ e]n cl5 cf cfa˜jfnf lbgd] cf] cfcf]/ lgs lnvs˜kf7ss ckg lnvn ljleGg s[tL ;e n˜s˜ ckg] ;dIf k|:t't xf]Ptf cfzf /v}t z'esfdgf b}t l5olg .

—snfsf/ ;/f]h lvnf8L

afnfh'—!^,sf7df08"

@)^)—^—@@sf]hu/f

उदास मौन

d}lynL syf ;ª\u|x



n]vs

;Gtf]if s'df/ ld>



k|sfzs

g/]z ld>

Ps syf :g]xs]+

नरेशके काका आई खुब सेन्ट छिटकऽ अपन साथीक बहिनक बिवाहमे जाएलेल तयार भेलाह । ताबते नरेश सेहो ओत पहुचलनि । काकाके नयाँ कपडा आ सेन्टमे देखकऽ कहलनि " कि यौ काका आई त बडा..........।"

काका पहिने जतऽ कतौ जाईछलैथ नरेशके साथे लकऽ । ताहि सँ ओ नरेशके कहलनि "चलबे त.....तहुँ चल,...जो जल्दि सँ तैयार भकऽ चैलआ । "नरेश बच्चा नहि बल्की ओ आई ए दोशर बर्षमे अध्यणरत अठाह्र बर्षक जबान छथि । ओ जल्दी सँ तैयार भकऽ आबिगेला तखन जाक दुनु काका आ भतीजा ओतऽ सँ बिदा भेलाह ।

जखन काका भतिजा दुनु ओतऽ पहुचलनि त घरबैयाके मोनमे बड आश अएलनि । दुनु गोटाके बिभिन्न काज देबके क्रममे नरेशके टेन्ट सबहक काजक जिम्मेबारी भेटलनि । नरेश एकटा असल अतिथीके भुमिका निर्वाह करैत ओ टेन्टके सरसमान लाबलेल तैयार भेला । ओहि ठाँम एकटा पुरान स्कोंट मोटर साईकल राखलछलैक । नरेश काका सँ ओहि मोटरसाईकलके लेल कहिते रहैथ तावते एकटा हाफ सर्ट आ जीन्स पैन्ट पहिरने ब्यक्ति अएलनि आ कहलनि "एहँ.....धिया पुता कि मोटरसाईकल चलैतै.....। "फेर ओ ओहि ठाँम राखल पुरना साईकल देखबित कहलनि "ओहे....लकऽ चलिजाउ । "एहन बात सुनिक हुनका मोनमे बड दुःख लगलनि आ ओ अपन घर जाकऽ बाबुजी सँ मोटरसाईकल लऽकऽ काजमे लागिगेलनि ।



बैषाखक महिना, चण्डाल सनक रौदमे टेन्टक पुरा काज समाप्त क नरेश आँगन बाला नारियल गाछ लग बनाएल टेन्ट पर कुर्सी पर बैसकऽ किछ सोचत रहैथ । तबते बेबी (जीनकर बिवाह रहैन) ओ हुनका सँ पुछलनि "नरेश.....भोजन

कैलहुँ....कि करब ? “नरेश किछ जबाब नहि देलनि। तखने अचानक हुनक नजरि एकटा कथी रंगक कुर्ती-सलबार पर पैरमे पायल आ खुजल केशबाली लैरकी पर परलनि। ओ लैरकी नरेशके एते निक लगैछैक जे ओ हुनका सँ बाजऽलेल ब्याकुल होब लगैछथि। हुनका मोनमे इहो भैएजाइछनि “एकरा संग हम जीवन बितासकैत छि।“

तखने लिलि अपन भाई संगे नरेश लग अएली आ हुनकर माँ आ बाबुजीके बारेमे पुछलगली। ओ बात त लिलि संगे करित रहैथ मुदा ध्यान केमहरो दोशर ठाँम रहै। कनिए देरक बाद ओहे लैरकी एकटा थारीमे चुरा, दहि, चिनि, आमक अचार, आर मिठाई सब लाबिक नरेशके नास्ता करला दैछथि।

नरेश दुनु हाथ सँ थारी पकरित कहलनि “आहाँ नास्ता....क लेलहुँ ?”

जेना कतेक दिनसँ परिचित रहै तहिना ओ कहलनि “जी नहि ....आब जाइछि हमहुँ।”

ओ पुनः जाकऽ तिनटा थारीमे नास्ता लकऽ अएली। लिलि, बिक्किके दैत ओ अपनो आतै खाए लगली। नरेश मात्र हुनके पर तकित रहैथ। एकबेर जखन नरेश हुनका पर तकित रहैथ तखने ओ सेहो नरेश पर तकली हुनका रहल नहि गेलनि आ ओ पुछलनि “आहाँक नाम...कि थिक ? निसंकोच ओ जबाब देली “हमर नाम.......रुबी अछि।“

काज सब ओरिया गेल छलै ताँहिसँ ओ बैसल छलाह। लिलि आ नरेशके पहिनहि सँ घरसँ आनजान रहैक। लिलि नरेशके कहलनि “नरेश........चल सबगोटा हमरा आँगन..........सब गोटा लुडो खेलब।“

ओत कानो प्रकारक काज नहि होबऽकें कारण सँ नरेश, लिलि, बिक्कि, आ रुबी चारु गोटे लुडो खेल चलल। सबगोटे ओत ब्यपारी खेल लागल जाँहिमे नरेश बैंक बनल। भाग्य सँ कहि वा संयोग सँ नरेशक कातमे रुबी बैशल। नरेशके जतऽ पचास देबके रहैन ओत रुबीके पाँच हजार दऽदैथ आ एकटा टिकट के बदलामे दुटा टिकट। आ अहि खेलऽके समयमे ओ रुबी सँ हुनका बारेमे सब किछ पुछऽ लगलनि। रुबीक एस.एल. सी.क सिम्बल नं. सँ घरक फोन नं. तक। एक बेर खेल समाप्त भेल। दोशर बेरक खेलमे बैंक रुबी बनली। रुबी एक के सट्टामे दु कऽकऽ

बिक्किके देबऽ लगली। रुबीक गलती बिक्कि सबके खोलिक देखादै। जखन रुबीक काज नरेश पाँच-छ बेर देखलाह त कहलनि “ई त एहन दुनिया छै जेकरा मद्दत करबै सेहे भाला भोकत।“ अहिके बाद रुबी नरेशकेँ एकटा टिकटकेँ बदला तिनटा आ............। एक बेर त नरेश फेक देलाह मुदा जखने रुबी नरेश पर तकलकै त नरेश रुबी कि कहऽ चाहै से बुझिगेलाह। आ नरेश सभ किछ स्वीकार करऽ लगलनि।

साँझकेँ करिब छ बजे नरेश अपन घर जाएकेँ लेल जुत्ता पहिरैत रहैथ तावते एकटा महिला रुबीके घर जाएला कहली। नरेश आ रुबी संगैह विदा भेल।

बाटमे नरेश पुछलनि “.....आहाँक घर.... कोन ठाँम अछि ?”

बडा सिनेहसँ ओ जबाब देली “महादेब मन्दिर बाला गल्लीमे”

किछ आगु बढैत नरेश कहलनि “....हम त ...आहाँसँ सब किछ पुछलहूँ मुदा ....आहाँ हमरा बारेमे ....?”

बात कटैत ओ कहली “हमरा लिली सभ किछ कैहदेली।”

एते बतियाइतो नरेश रुबीसँ अखनो बाजलेल छटपट करैछलाह ताबते ओ पुछली “अं.....आहाँके कोनो लैरकी साथी अछि ?”

नरेश ब्यंग करिते जबाब देलाह “हँ ..बहुते।”

नरेशक जबाब सुनिते रुबी गम्भीर भऽगेली आ पुनःपुछली “हम जे.....बुझिरहलछी .....से हो ?”

ठोह्मे मुस्की आ आखि सँ गम्भीर भऽनरेश कहलनि “हँ......अखन धरि त नहि मुदा आब भऽ जएतै।”

रुबी अपनामे खुसी भऽ फेर पुछली“कतऽ के छै”

नरेश जबाब देबमे धुकचुक भऽ कहला “काठमाण्डूकें”

ओ कनिक देर चुप भऽ चलऽलगली तखन फेर नरेश पुछलनि “.......रुबी आहाँके कोनो लरका साथी अछि ?”

जहिना नरेश कहने रहै तहिना आहो कहली “हँ ..बहुते।”

फेर नरेश सेहो पुछलनि “हम जे.....बुझिरहलछी..से हे ?”

“हँ......अखन धरि त नहि मुदा आब भऽ जएतै।”

“कतऽ के छै”
“दिल्लीके”

दिल्लीके नाम सुनिते नरेशके बुझ्झागेलनि जे ओ हुनके बात पर ब्यंग करैछली। फेर ओ सब कनिक देर चुपचाप चलल आ फेर नरेश कहलनि“ रुबी....जँ हम कोनो लैरकीके कहबै जे हम ओकरा सँ प्रेम करैत छि .....त....कि ओ स्विकार करती”

रुबी मुस्कैत गम्भीरता सँ कहली “हँ ...किया नहि। एकटा लैरकीके अपन बरके लेल जे किछ गुण चाही सुन्दर, निक स्वभाव-विचार, आदी इत्यादी सब किछ त अछि आहाँमे”

आब एते बातचित भेलाक बाद नरेश आब फेर हिम्मत जुटाक एकटा प्रश्न करैत अछि “........आहाँ असगरे कोनो लरिकाके साथ सिनेमा देखनेछि ?”
बडा गम्भीर भऽ ओ कहली “नहि”
“.....आ जँ केओ कहत त जएबै कि नहि ?
अहि प्रश्नक जबाब देबऽ लेल रुबीकेँ बड. कठिन परलनि आ ओ कहली “ जाएब [redacted]

एते सुनिकऽ नरेशक छाती काँपऽ लगलै आ ठोह सेहो काँपऽ लगलै मुदा तैयो नरेश कहैछै “.........काल्हि ३ बजे वाला शोमे........ निलम हलमे आहाँक प्रतिक्षा करब। हमरा विश्वास अछि जे आहाँ आएब।”
मुरी डोलबित रुबी कहली “ठिक छै”

एते बात भेलै रुबी अपन घर तक पहुचगेली। दुनु गोटे एक आपसमे बिदा लैत अपन अपन घर दिश लागल। अखन त साँझक सात मात्र बजलैय मुदा नरेशके प्रतिक्षा छै त काल्हूँक ३ बजेक। धिरे-धिरे हुनक मोन बेचैन होबऽ लगलनि। ओ कखनो टि.भि.लग आ कखनो कतौ। बैसले-बैसल नरेशके उचाट जकाँ लगै आ सोंचऽ लगैथ जे एतऽ किया बैसल छी। एवं प्रकारे नरेशके खाए, पिबऽ, उठ ऽ, बैसऽ सभ किछमे उचाट लागऽ लगलनि।

दोशर दिन नरेश करीब दूइए बजे सिनेमा हल पहुँचल। टिकट बिक्रि त अढाई बजे खुलैत छै। तखनकें एक-एक मिनट हुनका बझाएन जे एक बर्षक बितरहल अछि आ मनमे एकटा इहो छटपट्टी रहैन जे ओ अएती कि नहि। जखन साँवा

तिन बाजिगेलै मुसराधार पानि सेहो परऽलगलै तखनो नरेश बाहर जा-जाक देखऽ लगलाह। हलकें घण्टी जहिना लगै नरेशक छाती आओर तेज धर्क लगै। जखन तिन पैतिस भऽगेलै तखन नरेश देखैय रुबी पानिमे भीजित माथ पर आढनी धएने अबित। ओ जल्दी सँ कुदिकऽ रुबी लग जाइय आ हाथ पकरिकऽ भितर लजाइय। आ ई दूनुगोटे सिनेमा कम आ एक आपसमे बेशी तकित रहैय।

किछ देरक बाद एकटा गीत शुरु होइछ नरेश रुबीक हाथ पकरिकऽ कहैछ “....रुबी ....हमरा दिश ताकु नहि।”
रुबी हुनका दिश तकैछ त ओ कहैछथि “हमरा आहाँ सँ प्रेम भऽगेल “ई सुनिकऽ रुबी फेर पर्दा दिश ताकऽ लगैछ। नरेश फेर कहैछ आहाँ हमरा जबाफ नहि देब। बडा गम्भीर भऽ रुबी कहैछ “हमरा कनीक..........सोचऽ कें मौका नहि देब.........?”

किछ समय बाद रुबी रुबी नरेशक हाथ पकरिकऽ कहली “....नरेश हमरा आहाँ सँ प्रेम भऽ गेल हम आहाँ बिना रैह नहि सकैत छी। “

बातो तँ ओतबे होबऽ कें रहैक। कनिकें देरक बाद ओ दूनुगोटे सिनेमा हलसँ निकलाहँ आ साँझमे भेट करबाक बात करित अपन-अपन घर तर्फ बिदा भेल। करिब छ बजे साँझमे नरेश मोटरसाईकल लऽकऽ रुबीसँ भेट कआएल आ तखने जल्दिसँ अपन गाम डेबडीहा चैलदेलनि। गाम पुचैत साँझके साढे.सात बाजिगेल रहैक। ओ अपन माँ लग जाकऽ गम्भीरता पूर्बक बसिगेल। नरेशके एहन उदाश देखकऽ माँ पुछली “कि बात बेटा, अबेर आबिक, उदाश ?

नरेश माँकें अपन प्रेमके बारेमे कहऽ गेल रहैछ । बड हिम्मत जुटएलाके बाद नरेश कहलनि “माँ ....हमरा प्रेम भऽगेल ऽ”

माँके कोनो आर्श्य नहि लगलनि पहिने ओ लैरकि के बारेमे पुछली। आ नरेश सभ किछ कहला। तब माँ कहली “ठिके छैक। मुदा बाबुजीकें प्रतिष्ठा बचाकऽ।”

अहिके बाद दूनुगोटाकें भेटघाट आ फोन पर बातचित चलैत रहलै। बिवाहक चतुर्थीक रातिमे निमंत्रन परल रहैन। बिना काकाक संग कतौ नहि जाएबाला नरेश निमंत्रनमे असगरे चलिगेला। मोनमे ई रहैन जे ओतऽ रुबीसँ बात होयत। एवं प्रकारे नरेश आ रुबी बड नजदिक भऽगेल। दिन भरिमे बड कम त १२-१४ बेर फोन पर बात होइन। एक बेर अहिना रुबीक माँ नरेशकें रुबी आ सोनीके अंग्रेजी

पढाबला कहली। नरेश पढाब लगला। मुदा दूनु गोटा बिच जे बात होइ ताहि पर सोनीके शंका रहै। एक महिनाक बाद रुबीक बाबुजी सुर्खेत सँ अएलनि। हुनका रुबीक बारेमे मालुम भेलै ओ रुबीक झोराके तलाश कैलनि। हुनका नरेशक लिखल किछ चिट्ठि भेटलनि। साँझमे रुबी अपन भाईके हाथसँ नरेशके लेल चिट्ठि पठौली आ नरेश ओ पढिकऽ तुरन्ते रुबीक घरपर फोन करैत अछि। फोन रुबीके माँ उठबैछथि। नरेश रुबीसँ बात करऽके इछा ब्यक्त करैय मुदा फोन रुबीके हाथ नहि परैछनि। आ ओ नरेशके इहो कहैछथी जे आहाँ एतै आबिकऽ रुबीक बाबुजी सँ बात कऽलीय। ई बात सुनिकऽ नरेश अपन माँके सुनबैय आ रुबीके बाबुजी सँ बात करऽलेल सेहो जीद करैय। करीब १ बजे दिनमे नरेश आ हुनक माँ रुबीक घर जाइछथि। नरेशक माँके देखकऽ रुबीक बाबुजी कटाक्ष बोली बजैत कहैय "...आ....आएलजाए - आएलजाए" माँ सभलोक बैसल बाला घरमे जाईछथी आ नरेश रुबीबाला घरमे। ओतऽ सोनी सेहो पढैत रहैछ। घरमे जाइते नरेशक नजरि रुबीक हाथपर परैछै। बाहिमे काटल- काटल देखिकऽ नरेश पुछैछैक "ई कि.......हमरा पर भरोषा नहि "ओतऽ बैसल नोकरके बजाक नरेश पत्ती लाबऽला कहैछ। रुबी ओकरा मनाकरैछ मुदा सोनी लाबिदैछै। नेकोन इयरके १२ बजे बाला प्लेन सँ भागऽके बात सेहो रुबी सँ कहलनि हाथमे पत्ती पैरते नरेश अपनो हाथमे खचाखच ६-७ बेर मारैय ताबते नरेशके माँ हुनका बजबैछथी। नरेश कलपर जाकऽ हाथ धोकऽ अपन माँ लग पहुँचैछथि। माँ सभ सँ माफी मांग लेल कहैछथी नरेश माफी मंगैय मुदा एतेके बादो रुबीके बाबुजी एकैहटा बात कहैछथि " आब जे सभसँ पहिने लगन अएतै ताहिमे बिबाह करब त ठिक छै नहि त नहि हेतै। "ठिक छै हम एकर बाबुजी सँ बात करैछी "एते कहि नरेश आ हुनक माँ दुनु ओतऽ सँ बिदा भेलाह।

ओही रातिमे दू-तिन आदमी आबिकऽ नरेशके बाबुजीके कहैछ "आहाँके बेटाके सम्हारिलिअ नहि त ठिक नहि होएत "नरेशक बाबुजीकें एहन सुनिकऽ बर दास नहि भेलनि आ ओ कहलनि "हे जाउ ! ....हुनको एकहिटा बेटा छैनि से याद करादेबै। .....आब आहाँ सभ जाँ सकैतछी।" एते कहिकऽ ओ केवार बन्द कऽलेला। एवं प्रकारे रुबी सँ नरेशके कोनो प्रकारक बातचित करीब आठ महिना तक नहि होइछनि।

फेर नरेशके काठमाण्डू रहबाक बात होइछैक। मुदा नरेश १०-१५ दिन पर जनकपुर जाति अबित रहैय।

एक दिन नरेश रुबीसँ जेना होइ बाजऽके छै सोचिक निकलैय। भोरमे रुबी गणित बिषयक ट्यूसन पढ. लेल के. झा लग अपन साथी भावना संग जाइत रहैय। अचानक नरेशक घरपर रुबीक फोन अबैछैक आ रुबी कहैछ "बाह्र बिग्घामे बेरियामे भेट करऽ आउ। "जखन नरेश ओत पहुचैय त रुबी सम्पूर्ण घटनाक चित्रन करैत कहैछथी "....आब आहाँ जँ हमरा सँ भेटबै त हमर बाबुजी आहाँके जानसँ मरबादेता....से....कृप्या.........।"

मुदा नरेश जनकपुर १०-१५ दिन पर आन जान नहि छोरैय। आ रुबी सँ भेटबाक बात कहीयो दशमीमे, कहियो सुकरातिमे करैत -करैत नरेशके रुबी धोखा दऽदैछैक।

ओना नरेशके मनकें बड चोट पहुचैछैक तैयो ओ एकहिटा बात कहैछैक "बाहिमे रहू न रहू मोनमे रहलकरु।"

वाह नरेश !



sf/L kf}nlg sl/vf

भोगेन्द्रजी अपन गामक आंगुर पर गनाए बला धनीक मे सँ छैथ । ओना त भोगेन्द्रजी बेशी पढला-लिखला नहि मुदा अपन दुनु पुत्र सुबोध आ विनोद के एम. ए. तक पहुचैलनि । भोगेन्द्रजीक पुत्री आशा जखन आइ.ए. पास कलेलनि तैकँ बाद लगलनि हुनका लेल बर तकाय । बर भेटलनि । गामक धनिक आ बि.ए. अनर्स कैल बरक माँग भेलनि तिन लाख पचहत्तर हजार भा.रु. । बड धुमधाम सँ विवाह भेलैक आ साते दिनपर विदाग्री सेहो ।

आशाक स्वभाव आ विचारकँ बारेमे जते वर्णन कैलजाए कमे रहत । आशाक स्वभाव सँ सब गोटे बड खुसी रहैन । समय वितैत गेल । आशाक गर्भ स एकटा पुत्रीक जन्म भेलैक । आशाक बर (बलराम) के कनिको अपनेस किछ आर्जन कर पर चिन्ते नइ । पाईके जौं जरुरी बुझाय त गहना त छैहे । भोर आ साँझ बिना दारुके नहि रहऽ वाला बलरामकेँ आशा कते सम्झाबुझाक किछ आर्जन करबाक हेतु धनवाद पठौली । करिब डेढ महिनाक वाद बलराम गाम आएलनि । अगहन मास रहैक । दौनी, कटनी सब सेहो करबाब के छलैक । मुदा एको सप्ताह नहि वितलै । बलराम तैयार भेलनि फेरु जएवाक लेल । आ आशाके सेहो चलला कहलनि । [redacted] किछ मानऽ लेल तैयार नइ भेलाह । अन्तः आशाके जाएबाक लेल तैयार होबहे परलनि ।

तीने दिन बितल रहैक, बलरामकेँ गेला । चारिटा पुलिश सब सँ पुछैक बलरामक घरकेँ बारेमे । ओमहर सँ अपन गम्छा मे तरकारी बन्हने बलरामके बाबुजी अवैत रहैथ । एकटा पुलिश हुनकें सँ बलरामक घरकेँ बारेमे पुछलनि । बलरामक बाबुजी अपन परिचय देलैथ । तखन जाक ओ पुलिश सब कामेश्वर (बलरामक बाबुजी) के सब बात कहलनि आ ई सब सुनिते ओ लगला छाती-कपार पिटक कानऽ । कनिते-कनिते आँगन अएलनि आ कामेश्वर बाबुके कनैत देखिक घरक सब गोटा नजदिक आविकऽ सेहो कान लगलनि । आ कनिते-कनिते बलरामक माय पुहलनि “आहाँ किया ....कनैछि ....?”
कामेश्वर बाबु जवाब देलनि “कनियाँ त......... ट्रेनमे पिचागेली ।”

किछ पत्ता लगावक क्रममे ओ पुलिश सब मे सँ किछ आशाक नैहर गेल । भोगेन्द्र जी स भेंटक पुरा घटना बतौलक । ई त सुनिते भोगेन्द्रजी के देहमे झुनझुनी भैर गेलनि आ गारा भुकुर से हो लागिगेलन । पुलिश भोगेन्द्रजी सँऽ पुछलनि- “..........आहाकेँ किछ कहवाक अछि ?....... बलराम त थानामे अछि ।”
त भोगेन्द्रजी जवाब देलनि-“जी ....नहि हमर बेटिए बदमाश छल ।”

आशाकऽ नैहर पहुचल पुलिशसब आशाकेँ साशुर पहुँचल आ ओ कामेश्वर बाबुकेँ हथकरी लगाक गाम सँ लगेलनि । गामसँ आगु एकटा बजार छलैक ओत स एकवेर कामेश्वर बाबु फोन कैलनि त ओ पुलिश सबके एकटा आदेश भेटलैक जे ओ हथकरि खोलिक इज्जतके साथ ओ लजाएथ । पुलिश सब कामेश्वर बाबुकेँ इज्जत सँ थाना लगेलनि ।

थानामे कामेश्वर बाबुके नजरि अपन पोती पर परलनि ओ एक-एकटा क मुरही पात परसँ विछ-विछक खाइत रहैक । कामेश्वर बाबु तुरते दुध मंगवौलनि आ वाद मे वेटालेल सेहो बहुत पाई खर्च कैलनि तखन जाक हुनक वेटा थाना सँ छुटलनि । कामेश्वर बाबु अपन वेटा, आ पोती दुनुके ल क गाम जाइत रहैय । वाटमे एक ठाम जखन ट्रेन रुकलैक त कामेश्वर बाबु अपन वेटा सँ पुछलनि “तोहर .....सर-समान कि भेलौं ?”

बलराम बड सान सँ जबाब देलकै “बेचलिया । आ........ गहना नहि दिया तो ट्रेनमे धकेल दिया ।”
कामेश्वर बाबुके ई सुनिक बड दुःख लगलनि आ ओ कहलनि“जो ! रे कुपात्र । .... तु जे मैरते त हम नौहकेश नहि करैबति ।”

गाममे सगरो ई बातक चर्चा भेलै आ अहि वेटाक कारण गामकलोक हिनक-सबकेँ बारिदेलन । लोकसब घृणा करऽ लग लगलनि ।

एक राति करिब बाह्र बजे बलराम चिचियाीत घर स भागल । आ दलानपर अबैत-अबैत ओ बेहोस भऽ खसिपरल । हल्ला सुनिक बलरामक बाबु आ माँ दुनु बाहर निकललनि । अन्हारक कारण सँ किछ सुझैबो नहि करै । तावते मे एकटा महिला हाथमे लालटेन लेने, धोध तनने अवैत रहैछै । इजोत पर बुढा-बुढी अप्पन बेटाकेँ देखलनि आ बेंटा तर्फ दौरलनि । बेटालग पहुँचते अन्हार फेर भ गेलैक । ई देखक बलरामक बाबुजी परोशी धामीके बजाब गेलाह । मानवताकेँ प्रथम स्थानपर रखैत ओ धामी अपन कर्तब्य पुरा करऽ अबेछै । बलरामकेँ देखक धामी भुतक आशंका व्यक्त करैछैक । तावतेमे फेरु बलराम होसमेँ अवैछैक आ खुब जोर जोर स हल्ला आ बदमाशी कर लगैछै । हल्ला सुनिकऽपरोशकेँ दु-तिन आदमी आरो अवैछैक आ बलरामके बान्हिक राखिदैछैक ।

दु-तीन आदमी सँ बलरामके जचाँबलेल राँची ल जाइछैक । डाक्टर के कहलापर पागलखानामे बलरामके भर्ना कर परैछनि ।



;'eb|f



सुरजकेँ बाबुजीक मरलाक बाद सुरजकेँ माँ पागल भ गलैक । बाटपर किछ-किछ बरबराति रहैत छैक । सुरजक बहिन, सुभद्रा सँ ओकर भौजी घरक सवटा काज करबबैछैक। घरमे कपडा धोअ सँ लँक भोजन बनाब तक आ बाहर खेत सँ खरिहान तकके काजकर मे ओ एकोवेर नहि-नहि कहैत छैक। सुरज व्यपार पेशासँ सम्बन्धीत होब केँ कारण सँ फुरसत त रहैनहि छैन मुदा जखन ओ घरपर अबैत छैथि त सुरजकेँ कनिया सुभद्रा के बारेमे सिकायत करत आ उपराग लोक सुनबैय से सब कहैत रहैय ।

एक दिन सुभद्राक सहेलीकेँ दुरागमण रहैछै । सुभद्रा सबेरे घरक काज ओरियाक अपनो तयार होइय । जखन सभुद्रा दुरागमणमे जाएवाक लेल अपन भौजी सँ कहैय "भौजी !.... आजु मंजुक दुरागमण छै। हम देख जाइतछि ।"

भौजी मुह ऐठक जवाब दैछ "कोनो जरुरी नहि......... घरक काजसब करकेँ छै।"

"नहि भौजी,........... हम त जाएब आ,...... घरक काज सब ओरिया लेने छिऐ।"

"घरक काज जौ भगेल छै त जाक बारीमे पानी पटादिअ ।"

"मंजुक दुरागमण फेर नहि होइतै । ताहि सँ हम जाइछि ।" एते कहिक सुभद्रा आँगन सँ चैल दैअ ।

सुभद्रा त चैल जाइए । मुदा पाछा सँ सुभद्राक भौजी कहिते रैहजाइछै-

"नइ छै जाएकेँ, ...सोइचलिअ !!!"

रातिमे जखन सुरज आँगन अबैय त अविते नजैर चुल्हि पर परैछैन । ओत चुल्हि फुटल आ बरतन सब ओङ्घरायल रहैछैक । ई देखक सुरज अपन कनियाकेँ वजबैछैथ"......गामबाली !! गामवाली !!"

सुरजके आवाज सुनिकऽ गामवाली घर सँ कुहरैत निकलैछै । गामवाली के देखक सुरज गामवाली सँ पुछैत अछि"ई........सब कि छै ? ....हँ.....।"

कुहरैत गामवाली जबाव दैछ "आहाके त किछ बुझले नहि रछैय,........ घरक वेटी विगैर गेल आ, आहा चिन्ते नहि करैछि ।"

सुरज ई सुनिक फेर पुछैय".............ई आहा कि बजैछि ?"

"हँ हँ ई हे कहब कि, सुभद्रा दिनमे चारिपाँच बेर खेत तर्फ जाइए । आ आब....... हमरा एना बुझाइए कि सुभद्रा क पेटमे केकरो......."

ई सुनिक सुरज अपनाके रोक नइ सकैय आ अपन गामवालीकेँ एक थप्पर मारिदैअ । फेर गामवाली कानिक कहैय"आ.......... ई हे वात पुछली त ....हमरा पर हाथ उठौलक आ चल्हि फोरिदेलक ।"

सुरजकेँ अपन प्रतिष्ठाकेँ चिन्ता लागिजाइछैक । सुरज घरमें जाक ओछ्यान पर वैशक लगैय अपन प्रतिष्ठाकेँ बारेमेँ सोच । कनिके वेर बाद सुभद्रा से हो अबैय । कोनो बेशी अबेर नइ भेल रहैछ । सुभद्रा डिवियाक तिलमिलाति इजोतमेँ भैयाकेँ देखक भैयालग जाक पुछैय-

"कि भेल भैया ?"

सुरज सुभद्राके एक थप्पर मारिक घरमे पठादैछ । सुरजके अपन प्रतिष्ठाक चिन्ता लगैछ हरान करऽ कनिक देरक बाद सुरज बाहर चैलजाइय । करिब बाह बजे रातिके बाद सुभद्राक कोठरीकेँ केवार ढकढक होइछै । ई सुनिक सुभद्राके मनमें ई होइछ जे भोजन करऽ ला आ भैया जगाब आएलनि । जखन सुभद्रा केबार खोलैछै कि एकटा मर्द ओकर मुह आ हाथ पकैर लै छै। आ फेर दुटा मर्द दुटा लाठी लऽकऽ घेउटके उपर निचा धकऽ दाविदैछै । सुभद्राकऽ घेघीयाति आवाज ओकर माकेँ कानमे परैतछै।। त बुढिया बाहर निकलिक हल्ला कर लगैछै "बाबु सब हो बाबु सब................हमर बेटीके मारैय हो....बाबु सब ।"

मुदा पागल बुढियाके बात केओ नहि सुनैय। आ, सुभद्राकऽ लाश के सबगोटा नदि किनार लकऽ जराबऽ जाइछै। नदिपर पहुचक ओहिमें सँ एक आदमी कहैछै "एकर पेट चिरक देख। कही...... सुरजा झुठ त नहि कहलकौ ।"

सुभद्राके मरला बादो ई सब सुख नहि दै छैक । पेट चिरकऽदेखैछैक । मुदा

ओकरा पेटमें खएला खाना छोरिक किछ नई भेटैछै।ओ फेर कहैय "साह,....... वौह के वातपर होतै मरबौने होतै।"

दोसर कहैय "हो........अपनासबके कथी लगैछौ।"

पहिले वाला आदमी कहैय"एकर हाथपैर काटिन्दैछि नहि त.....भुत भ हरान करतै।"

हाथ पैर काटिक ओकरा जरादै छै। आ, भोर होइत-होइत सुभद्रा नामक इतिहास बनिजाइत अछि। आब ई वात गाम में एक कान सँ दोसर कान आ दोसर सँ मैदान भ जाइछ। गाममे पुलिश अबैय। सहरजमिनमे ई प्रमाणित से हो भजाइछ जे सुरज अपन बहिनके मरबौलक सुरज के अदालत २० वर्षक जेल सजाय दैतअछि। सुरजकें जेल गेलाक बाद गामवालीके मनमोजी भऽ जाईछ। जे मनमे अबैछ से करैय।

सुरजके स्वभाव के कारण सँ १५ वर्षमे बाँकी सजाय माफ भ जाइछ। सुरज अपन गाम पहुँचैछैक।ओना समय त बड बदलिगेल रहैछ। गामक ईनार भैस गेल रहैछ। बहुतो गाछ सुखिगेल रहैछ। आ लोक सबहक आदत सेहो।

[redacted] आ वैके पाछा ओकर गामवाली से हो। सुरजके देखिते ओ मर्द त टाटके दोग दने भागि जाइय। सुरजके बितल बात अखनो यादे रहैछै जे गामबालीके कहला पर गंगा सन पबित्र बहिनके मारि दैछ। ई सब ध्यानमे अबित सुरज आगनमे धएल हासुल लक अपन गामवाली कें गरदनि काटिक फेर थाना जाक हाजीर भजाइछै।



bfu nfun :g]xd]+

आई.ए. प्रथम वर्षमे अध्यनरत सुनिताकें एकटा बड निक विद्यार्थी दिपक सँ भेट होइछैक। बात-बिचार मिलऽ कें क्रममे सुनिताकें। दिपकसँ प्रेम भऽ जाइछैक। सुनिताक घरसँ नजदिकें के घरमे भाडा लक रहबाला दिपक से हो सुनिता सँ प्रेम कर लगैछैक। आ, सुनिताक साथी रुबी सेहो जखन भेटभेल तखने दिपककें बारेमें पुछ लगैछैक। दिपक, रुबि आ सुनिताकें पढमे से हो बड मदत करैछैथि। समय-समय पर दिपकसंग सुनिता सिनेमा देखऽ सेहो जाय लगैय। दुनु एक आपसमे कहियो मन्दिर लग आ कहियो पार्कलग भेटघाट करके बात सुनिताक बाबुजीकें कान तक पहुँचजाइछैक। सुनिताक बाबुजी बड दुखी भऽ सुनिता लेल वर ताक लगैछथि। ई वात सोचिकऽ जे बेटी अपन प्रतिष्ठा सेहो बुरादेत। संचयकोष सँऽ पाई छोराक बेटीलेल गहना-गुरिया से हो वनाब लगैछथि। सुनिता ई सब बात अपन सहेली रुबिकें सुनबैय। ई सुनिकऽ रुबि दिपककें संग भागिक विवाह कर ला आ मिथिलाक दुर्दशा दहेज आ महिला अधिकारके बारेमे निक जका पाठ पढादैछैक।

दोसर दिन सुनिता अपन साथी दिपककें भेट कऽकऽ भागिकऽ विवाह करऽला कहैछैक। सब किछ सुनलाक बाद दिपक भागऽके लेल समय सेहो निश्चितक सुनिताके कहैय। प्रातः काल सुनिता आपन माँके मंगलशुत्र, तिलहरी आ अनवारीमे राखल रुपैया लऽ दिपक संग भागिजाइय। आ दुनू सब मुम्बइ पहुँचैय। दिपक रहऽकें लेल अपन मितकें डेरामे व्यवस्था मिलबैय। आ, सुनिताकें डेरामे छोरिकऽ दिपक ओमहरे रैहजाइय, जाँहि कारण सँऽ सुनिता बड चिन्तित भजाइय। मुदा साँझमे दिपक कें देखिते सुनिताके चन्द्रमा सनक मुहसँ इजोत निकलैछैक। आ, ओइ राति सुनिता दिपकपर पूर्ण रुपे सर्म्पित भऽ जाइय।

भोर मे जखन सुनिताक आँखि खुलैछै त दिपक ओतऽ नहि रहैछैक। दिपक नितक्रिया मे गेलहोयत सोचिक सुनिता जल्दि सँ उठिक अपन कपडालता पहिरक तैयार होइय। मुदा एमहर-ओमहर तकैत सुनिताक नजर चिट्ठी पर परैछैक। ओ चिट्ठी खोलिक देखैय, लिखल रहैछैक "हमरा माफ क दिअ सुनिता।"

ई पढिक सुनिता अपन माथ कपार पिट लगैय आ सोच लगैय जे कि भगेल। सुनिताक छाती धर धर धर धर काप लगैछैक। तावते केवार खुलैछैक। आ, एकटा महिला पान खैने दुटा मर्दके लक पहुँचै छै। पहिने ओ महिला सुनिता सँ पुछैछैक "तम्हारा नाम.... सुनिता है।"

"हाँ, हाँ, मगर क्यो ?" सुनिता डेराक जवाफ देछै।

ओ महिला फेर कहैछै "चलो हमारे साथ।"

"क्यो ?"

"हमने तुमको ....खरिदा है।"

"नही ए भ्कुठ है।"

ओ महिला अपन साथमे आयल मर्दकें कहैछै "ए ! उठालो सालीको,...... बहोत बोलर लिए।"

दुनु मर्द सुनिताके उठाक लजाइय। सुनिताके देह व्यापार कर ला कहलजाइछ। मुदा अस्विकार कएला पर सुनितकें लगैछै पिटाइ आ द् देओल जाइछ निशा के सुई। निशाकें सुई दक् देह व्यापार कराबके कारण स ओ विमार भ् जाइछ। ताहि सँ् ओकरा जचाँब् लेल डाक्टरलग लगाइछ। ओ सौचालय जायकें बहाना सँ् ओत् सँ् भगैय। आ भाग्मे सफल सेहो भ्जाईछ।

सामने अवैत रिक्सापर बैसक् ओ रेलवे-स्टेशनपर पहुँचैय। रिशसाबाला जखन पाई मगैछैक त सुनिताकें सबकिछ सुनाब परैछैन। किया त सुनिताक सबपाई ल क दिपक चैलगेल रहैय। सुनिताक दुःख भरल खिस्सा सुनिक रिक्सावाला सुनिताकें अपन डेरा लजाइय। आ दु-तिन दिनमें अपन गाम पहुँचादेवकें बचन से हो दैय। रिक्शावालाक वात सँ् सुनिताकें विश्वास होइछ।

सुनिताकें संग परिचयपात होब् के क्रममे रिक्शावालाकें घर सेहो परोशकें गाउँमे छैक से ओ वतवैय। दु-तीन दिन बाद सुनिताक संगे रिक्शावाला अपन गामकें लेल निकलैय। रेलबे स्टेशनपर सुनिता पुरा एमहर-ओहमर देखैत सावधानी सँ् चलैय मुदा जहिना ट्रेन आगा बढैछै, सुनिताक घरकैत करेज स्थिर होब लगैछैक। सुनिता ताक लगैय रिक्शावालापर आ सोच लगैय ओ दुनुकें फरककें बारेमे।

रिक्शावाला सुनिताकें लक् जखन सुनिताक् घर पहुँचैय त् सुनिताक बाबुजी सुनिताके देखक कहैछथि "आब कि लेब अएले.................., ओतै सँ चैलजो नइ त हमहि सब बिख खा लेब।"

सुनिता विना किछ बाजिक् मुरी गोतने बाहर निकलैय। सुनिताक् हाथ रिक्शावाला पकरिलैछ आ ओ अपन घर चल् ला कहैछ। जखन ओ दुनु बाटमे पर्वाला दिपककें डेरा लग पहुचैय। कोठरी भितरसँ बन्द रहैछैक। सब दिन खिरकी दने वजाबकें आदत सुनिता खिरकी दने पुनः बजाबलेल तकैछ। मुदा सुनिता जखन खिरकि दने तकैछै त सुनिताक साथी रुबि दिपक के कोरामे बैशल प्रेमरसकें वात करैत रहैछ। ई देखक, सुनीताक पैर तर सँ् जमीन जेना निकलिजाई तहिना भ्जाइछ। आ ओ अपना पर भेल अत्याचार दोशर पर नहि होउक से सोचिक् नजदिक कें थानामे जाक दिपक के बारेमे लिखवैय। सुनिताकें स्थीती परिस्थिति देखक आब ओ कत जएती सोचिक रिक्शावाला सुनिताकें कहैछ "एक बात कहु, ...पिताएब न नहि ?"

उत्सुक्ता जनबैत सुनिता, कहैछ " ह ! कहु ....!"

तब रिक्शावाला कहैछ "आहा हमरा सँ ....विवाह करब।"

ई सुनिक सुनिता हस् लगैछ।



xd/f ofb cl5

हम आठमे पढैतछलहु बात त तहिएके थिक । दोसर-दोसर स्कूलसँआयल नयाँ-नयाँ विद्यार्थी तिनटा साथी स परिचय भेल । आ, ई, तिनु सँ परिचय भेलाक बाद हमहु पहिल-दोसर ब्रिन्चि पर बैसनाइ छोरिक अन्तिम ब्रिन्चि पर ओकरा सब साथे बैस लगलहुँ । अन्तिममे वैसकऽ अनेक प्रकारक गप होइछलै । ताहिक्रममे लैरकी सबकेँ बात बेशी होइक । ई सब हमरो सुनऽ मे बड निक लागे । एक दिन हमरा सबकेँ क्लाशमे चौथी ब्रिन्चिपर बसैल भाटारंगकऽ कपडा पहिरने लैरकिकेँ बारेमे गप चलऽ लगलैक । शिक्षक चैलअएलनि सब चुप मुदा शिक्षककेँ गेलाक बाध फेरु ओकरे बारेमे गप । ओ रहवो करै एते सुन्दर जे लगै चन्द्रमा मैँ स टुटल टुक्रासँ ओकर मुह बनल होइक । क्लाशक प्रायः लैरका सब ओकरेपर तकै । आब ओकर नाम कि थिक ? पत्ता लगाब परलैक । मुदा हम अपन साथी सबके हम कहलहु “आहा सब ई काज...... हमरापर छोरिदिअ”

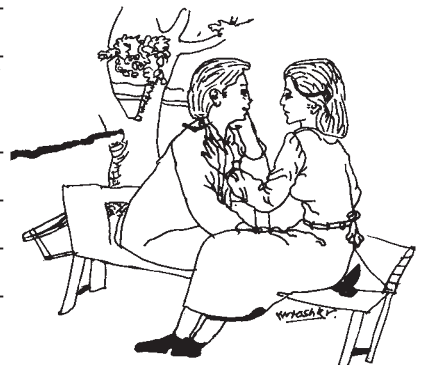
[redacted] भेलैक । [redacted] । आ ई पत्ता लागलजे ओकर नाम मनोरमा छैक । आब बात रहल ओकर घर पत्ता लगाबकेँ । त आनदिन जैतहु त अबेर भजाइत । ताहि सँ हम आ हमर साथी जगत शुक्र दिनक ओकरा पाछा करैत गेलहँ । घर पत्ता लागिगेल । अहि सब किछ केँ बारेमे हम संजयके सुनैलहूँ । ई सब त हम करैछलहुँ हमर मित संजय ला मुदा मनोरमाकेँ धीरे-धीरे हमरा सँ लगाब होबऽ लगलैक । मनोरमा के हमरा सँऽ लगाब देखिकऽ संजय हमरा सँऽईर्शा करऽ लागल ।

मनोरमाकेँ नजरिमे हमरा गीराबऽ लेल आ अपने निक बनऽलेल अर्धवार्षिक परिक्षाक अन्तिम दिन हमरा पर हात उठेलक अपना साथीमे सबसँ कमजोर हमही रही ताही सँ हमरा माइर खाए परल आ कपार से हो फूटिगेल । बाबुजीक डर सँ घर नहि जाकऽ हम मन्दिरपर वैसल छलि । करिब १५-२० मिनटकेँ बाद मनोरमा ओत पहुचली आ हमरा कहलगली “एना डरपोक भऽ कऽ नहि चलत,.......... आहाँ कँराटे सिखु आ....... किछ करु ।”

ई वात सुनिकऽ , हम बड सोचलँहु । कि, ओ ठिक कहलीअ कि बेजाय । ओहि दिन साँझ सँऽ हमहुँ कराँटे खेलगेलहुँ । आ, ३ महिना पहुचैत- पहुँचैत हम अपना क्लबके एकटा निक खेलाडी बैनगेलहु ।

दशमी आएल । स्कुलमें सबसाथी एकआपसमे शुभकामना आदन-प्रदान केओ मुह सँऽ आ केओ पोष्टकार्ड आ ग्रिटीङ्ग कार्ड सँ । हमरो एकटा ग्रिटीङ्ग कार्ड मनोरमाके तर्फ सँ भेटल । जे कार्ड सायत संजय के कहलापर अरुण चोरालेलक । मुदा, फेर छुट्टी कालमे संजय अपनाके हिरो बनाबऽकेँ लेल हमरा पर हाथ उठौलक मुदा हम ओते आब आशान नइ रैहगेलरही । हमरा दुनुके बराबर माइर चलल आ, पुनः हमरा कपार फुटिगेल । तावते स्कुलकें एकटा शिक्षिका आबिक झगडा छोरादलनि । आ ओ ई हो कहलनि जे एहन जँ आदत रहतौ तऽ जीवनमे कहियो आगु बढल पार नहि लगतौ । ई आठ -दश वर्गक विधार्थी कही एहन भेल ।

फेर, विद्यालय खुजल । सबगोटाके तँऽ बुझले छलैक हमर आ मनोरमाक प्रेमके बारेमेँ ई चर्चा कने बेशिए भऽ गेलैक । एक दिन मनोरमा हमरा स्कुल छोरिकऽ सिनेमा देखला कहलनि । हम आ मनोरमा आशा हलमे अमानत फिल्म देख गेलहु । वै के वाद ई क्रम चलैत रहलै । समय वितते गेलैक । हम सब एस.एल.सी. दैत रही त हमरा मालुम भेल कि मनोरमाके विवाह फागुनमेँ छैक । ई सुनिक हमरा शारीरक रक्त सञ्चार बन्द भऽगेल । हमर सोचन शक्ति हेरागेल । आ एकटा एहन अवस्था चैलआयल जतऽ नहि त हम कानि सकतछी नहि हम हसिसकैत छि । मुदा एतऽ कि करु हम बुझऽ नहि सकलहुँ । ई सुनिकऽ हमरा हृदयके से हो कने चोट पहुँचल किछ दिन बाध ओकर सहेली संकटमोचन लग भेटलनि आ कहलनि “कल्हि खन ३ बजे आँहा राम मन्दिर अवियौ ।”



हमरा किछ अवेर भऽगेल करिब पौने चारि बजे ओत पहुँचलहु । ओ सब तिनो बजेसँ पहिले आएल रहैक । हमरापर ओ खुब जोइ सँ खिसएली । मुदा हम किछ जबाब नहि देलियनि ।

अन्ततः ओ एतवे कहलनि जे हम सब किछ लऽकऽ चैल आएल छि आ अपने सब भागु । हिम्मत काज नहि केलक जे दुनु अदमी भागी जाई । हम नहि छोरिक आइ किछ जबाब नहि देबऽ सकलहुँ । ओना तखन तऽ हम पुरा होशमें छलहुँ । भागीकऽ विवाह करऽ बालाकऽ तिन पुस्ता बखाद भऽ जाइतैछक । ताही सँ ई मनक बातमे हम दिमागक प्रवेश कऽ कऽ हम अन्तोतक नहि मात्र जबाब देलीयनि । एतेक बात मात्र भेलैक मुदा साँझके सात कोना बाजिगेल बुझ नहि सकलहु । जाए कालमे ओ कहली "अमर .... हम आहाके श्राप त नहि दऽ सकैतछि मुदा एकटा शिख जरुर देब जे.................. एहन काज कहियो नहि करब जै सँ केकरो मनमे दुःख लगै ।"

आ ई बात हमरा अखनो याद अछि ।



w[ls]Fubxf

सुबोधकेँ बच्चे सँ माँ आ बाबुजीक निक स्नेह भेटलनि । सुवोध हसिते, खेल्ने मेट्रिक पास भेलाह । गामसँ लगे पर वाला कौलेज मे आ.ए. पढैत रहैथ ।

एकदिन हुनक बाबुजी हनका बजाक कहलनि "अपना खेत कते छौक से त बुझले छौक......... आब हम तोरा खर्च नहि द सकैछि आब तो अपने किछ आर्जन कर केँ कोषीश कर.....।"

ई बात सुनिक सुवोधकें मनमे दुःख लगलनि आ ओ अपना बाबुजीके कहलनि "हम एते पाइ कमासकैत छि जे आँहा पुते कहियो खर्च ककऽ खतम नहि कएल पार लागत ।"

आ, ई वात कहिक ओ बाहर जाएकें लेल तयारी करऽ लगैय ।

ताबतें किछ दिन बाद सुवोधके वास्ते अगुवा एलनि आ हुनक बाबुजी तिलक लक सुवोध केँ विवाह क देलनि । विधी विद्यान सँ सुवोधक विवाह सु-सम्पन्न भेलनि । तिकममेका जे पाई बैचगेलरहनि ताहिसँ ओ छोटमोट व्यापार कँर केँ सोचलनि । ओ पटनासँ दवाई आ अन्य किछ लाविक वेचैछलैथ । एक दिन जखन ओ पटनाक गोविन्द मित्रा रोड पहुँचैछथ लखने हुनका ३ आदमी घेरक चाकु देखाक -

"जते पाइ छौ निकाल नहि त मारिक नालीमे फेक देवौ ।"

ई धमकी द सुवोधसँ सवटा पाई छिन लैछनि ।

सुवोधक जेवीमे एकटा फूटलो कौडी नई होब के कारण स ओ वड कष्ट कक अपन घर पहुँचैछथि । तिन दिन वाद भुखले सुवोध अपना घरपर पहुँचैय । मुदा ई घटनाक वात किनको नहि सुनवैछथि । मुदा ई वात ओ अपना मनमे से हो नहि दवाब सकैय । आ ई कारण ओ एकदिन आधा रातिएमे उठिकऽ घर घेरिक चैलजाइछैक । आगा पहुचक जइ वस पर चढ लनि ताही वसक स्टाफसँ पुछलनि "ई बसमे ......यात्री विमा अछि कि नहि ?"

एहन वात सुनिकऽ लोक कहैक "ई छौरा त ....पागल लगैछैक ।"

मुदा सुवोधकें मनमे ई छलैक जे हम मरियोजाएब त विमा वाला पाइ हमर बाबुकें भेटऽ जाइतै जै सँऽ किछ निमहि जएतै । मुदा ओकरा अपन घरवालीके चिन्ता कनिको छैहे नहि । सुवोध मुम्बई पहुँचैय ।



मुम्बईमे सुवोध करिब २० दिन पाथरि फोडवाला काज करैय आ पुनः ओ दोसर काज करकेँ तैयारीमे लगैय। काज ताकँऽके क्रममे एकदिन सुवोध देखैय एक आदमी आगु-आगु भागिर हल आ चारिगोटें ओकरा खेहारैत। हाथमे तलवार लऽकऽ खेहारैवाला सब बड क्रुर लगैत रहैत छैक। भागऽ वाला आदमी सुवोध ठाह्‍ भेल वाला गल्लीमे नुकारहैछैक। बाँकी खेहारवाला सब चारुतर्फ ताकिक ओ फिर्ता चैल जाइए। तखन ओ नुकायल अदमीलग जाकऽ अपन परिचय दैछैक आ काजक तलाशमे छि से हो कहैय। ओ आदमी सुवोधकें अपन मालिक लग लऽजाइतछै। खाँन पोशाक पहिरने दाह्‍ि वाला आदमी सुवोधके एकटा काज सोपैछै

"ई वेग लऽकऽ समुद्र किनारमे पहुचादही तोरा ओतै हमर अदमी भेटतौ आ तोहर परिश्रमिक ओतै दऽ देतै।"



[redacted] आदमी भेट जाइछैक। ओ वेग सुवोध ओकरा दँक अपन परिश्रमिक पच्चिस हजार रुपैया पबैय।

हातमे पाई परिते ओ सबसँ पहिने जीवनविमा करबैय आ पुनः अपन काजमे लागि जाइय। एक दिन जखन सुवोध वेग लऽकऽ समुद्रकात जातिरहैय त पुलिश पाछा आब लगैछैक। सुवोध अपन मोटर-साइकल छोरिक लगैय गलिदने भाग। सुवोध आगा आ पुलिशपाछा। ई क्रम चलैत चलैत पुलिश सुवोधपर गोली-चलवैछैक। सुवोधके पिठपर गोली लागिजाइछैक। सुवोध लगैय छटपटाय। हाथसँ वेग खैस परैछै। गोलीके आवाज सुनिक लोक लगैछै भागऽ। पुलिश वेग खोलिक देखैय त ओकरा वेगमे मात्र उजरा पाउडर रहैछैक। पुलिश पुनः दोसर गोली ओकरा माथपर मारिदैछैक। सुवोधकँ प्राण ओतै छुटिजाइछैक। पुलिश ओकरा लाशके समुद्रकात मे लजाक फेकदैछै।

मुदा सुवोधके माथ-बाबु आ कनियाके अखनो प्रतिक्षा छै सुवोधके।

ljjfxs-k|ltIff

अमरकँ माँ आ भाई अमरके विवाहक चर्चा करैत रहैत अछि। आ हाथमे फोटो लऽक केओ बजैय -

"लैरकी त सिनेमाक हिरोनी सनकें छैक"

फेर के ओ बजैय "लाखौ कि..... करोरोमे एक छै।"

ई वातक चर्चा करिते बेरमे अमर घरमे प्रवेश करैत अछि। केवारक आवाज सुनिकऽ अमरकँ माँ केवारदिश तकैत अछि आ अमरके देखिक पुछैछथि "कि रौ आइ त...... सवेरे कलेज सँ चैलएलही।"

अमर जुत्ता खोलैत कनी स्तीरे सँ जवाब दैत अछि "हँ, आइ कलेजमे दुनु पाटीवाला छौरा सब झगरा झंझट कैलकै ताहीसँ......... कलेज अनिश्चित कालके लेल बन्द भगेलैक।"

ई सुनिक माँ बजैछठि "ई छौरा सब कौलेज पढ.ऽ जाइतछै कि राजनितीकरऽ ...किछ बुझ्वे नहि करैछी।"

अमर फेर कहैय "तो सब कथीके चर्चा करैत छलेह ?"

प्रश्न सुनिते अमरके भाई सुवोध बजैय "भैया ....ई फोटो देखीयौ ने।"

अमर भाइकँ हाथस फोटो लऽकऽ देख लगैछैक।

फेर ओ फोटो उल्टवै छैक। फोटोक पाछामे लिखल पत्ता अमर पढिकऽ ओ फोटो द दै छैक।

दोसर दिन अमर भोजन कऽकऽ तैयार होइछै आ अपनमाँ के कहैछै-

"माँ, हम कने मधुबनी जाइतछि।"

माँ ई सुनिक जवाब दैत छथि "परसु तोरा ओमहर सँ देखऽ अबैत छौ आ तो......"

"नहि माँ हम कल्हिए चैल अवौ।"

माँ कहैत छथि "ठिक छै जो ....मुदा वातमे फरक नहि परबाक चाही।"

अमर अपनसाथी रंजीतके साथमे लऽकऽ फोटोपर लिखल वाला पतापर चैलजाइए। गाँउमे जखन ओ सब पहुचैय तँऽ ओत देखैय कि लोक सब केओ केमहरो, कओ



केमहरो भगैत रहैछ । अमर आ रंजीत दनु ओमहरे जाइए जेमहर आगि लागल रहैत छैक ।

ओहीठाँम एकटा विधवा, दुटा महिला आ एकटा स्यान लैरकी खुब कनैत रहैतछैक । ओकरा सबहक मुहसँऽ "बौआ रौ बौआ" निकलैत रहैक छै । ई देखिक रंजीत बुदिया सँऽ पुछैत अछि "कि भेलैय जे वौआ, वौआ कहैछि ।"

बुदिया कनैत जवाव दैय "वौआ...... रे हमर पोता ओहिमे.....।"

ई सुनिते अमर पहिनही दौरजाइत अछि । आ पाछा सँ रंजीत हल्ला करैय "रुक !!! रुकिजो अमर........ ।"

अमर आगि आगल घरमे पैस जाइय । रंजीत पाछु सँ दौरैत अछि मुदा पैसऽ सँऽ पहिनही केवार खसिपरैछैक । करिब तिन-चारि मिनटककँ वाद अमर वच्चाकँ लऽकऽ खिरकी दने कुदैत छैक । ई देखक रंजीत कने नमहर श्वाश लैय । जखन पुरा आगि मिझा जातिछै त अमर आ रंजीत अपन घरकँ लेल चैलदैय मुदा बुदिया वड आग्रह करऽलगैछै

"बौआ आई एतै रैहजाउ ।"

वुदियाके आग्रह देखकऽ रंजीत अमरकँ रुकिए जाएला कहैछै । केओ गोटा अमर आ रंजीत सँ परिचय सेहो नहि पुछै छैक । किया त ई सब अमर परिचय वच्चाकँ जान बचाक दऽदेनेरहैछैक । घर जरिगेलाक वादो वुदिया अमर पाहुनके दलानपर वैसबैय आ वुढि. ओतऽ सँ चलिजाइए ।

पोखरिदिश जाएके बहाना बनाकऽ दुनुसाथी घुमऽ कँ लेल निकलैय किया त हुनका सबके एकटा दोसर काज सेहो छैन । ओमहरसँऽ एकटा मर्द हाथमे लोटा लेने अबैत रहै छथि । हुनका बजाकऽ रंजित पुछैय–

"भाईजी व्रज मोहनजीक घर केमहर छैक ।"

ओ वटोही जवाब दैय "ओ हुनकरे घरमे त आइ ....आगि लागीगेल छलैय ।"

अमर विचार करऽ लगैय ओ लैरकी कें बारेमे किया कि ओहे लैरकी सँ बिबाहक बात रहैछै ।

दुनुसाथी चिन्तामे पैरजाइए । आ चुपचाप अपन दलान पर आबिक बैसजाइए । के ओ किनको सँ वजितो नहि रहैछैक । कनिके देरके वाद ओ लैरकी खाना लकऽ अबैय । भोजनक साज देखक रंजीत कहैय "एतेक करऽकँ कोनो जरुरीए नहि छलैक ।" मुदा ओ लैरकी कोनो प्रकारक जबाब नहि दैत कहैछैक "आहाँसबकँ भुख लागिगेल होयत जल्दिसँऽ .....भोजन कलिअ ।"

दुनु गोटा भोजन कएलाकवाद रंजित अमरकँ लैडकी कें आगातक अरीयाति देवऽ ला कहैतछै । अमर वै लैरकीके अरीयातऽ चैलजाइए । रंजीत तऽ मोनेमोन खुसी रहैय कि अमर ओकरा सँऽ किछ नहि किछ त पछबे करतै । मुदा अमरकँ ओकारासँ किछ पुछवाक लेल हिम्मत काजेनहि करेछैक । किछ आगु अएलाक वाद ओ लरकी कहैछैक -

"आँहा जाउ, आरम करु ।"

अमर दलानपर फिर्ता भऽ जाइए ।

प्रातःकाल सूर्योदय होबऽ सँऽ पहिनही रंजीत आ अमर ओतऽ सँऽ चैलजाइय । अमर घर पहुंचकऽ माँ आ बाबुजीकें दहेजक बिक्रीतीके बारेमे चर्चा सुनबैय । मुदा अमरके बाबुजी ई सब सुनलाक वाद जवाब दैछथि-

"रे तो सब नहिने वुझबे जे कतेक आशा राखिक तोरा सबमे खर्च कैलि आ अखनो करैछी ।" पोर साल जे तोरा वहीनक बिबाहमे तिन लाख तिलक गनलहुँ से । ओइ समयमे दहेगकऽ विकिती त केओ नहि सुनैलनि ।"ई सुनिक" अमर वावुजीक विचारकँ वारेमे नहि सोचैछ कि मुदा ओ लैरकि वाला सवकँ वारेमे सोचऽ लगैछय जे ओ सब पहिने घर पर ध्यान देता कि तिलक गन्ता । ई वात सोचिते अमरकँ बाबुजी सऽ सहमति नहि भऽ ओही साझँ घर सँ कतौ भागिजाइय ।

लैरकी देखाबऽ के लेल जानकी मन्दिरमे अबैय । अमर नइ होबऽके कारणसँऽ अमरके माँ अमरके फोटो लऽकऽ पहुचैय । जलपान आदी भेलाकवाद आब सबगेटा लैरका के बजाबके लेल कहैय । ई सुनिकऽ अमरकँ माँ कहैछथि "अमर त कने कौलेजके काजसँऽ काठमाण्डौ गेलअछि ।"

फेर अमरके फोटो वेगमेसँ निकालिकऽ दैत कहैछथी “हे, लिअ ....फोटो लैरकाकेँ ।”

लैरकि वाला सव फोटो देखिते एकआपसमे कानफुस्की करऽ लगैय । सवगोटा फोटो देखिते-देखित फोटो लैरकीके हातमे परैय । फोटो देखिते ओ चिन्हलैय । अमर के प्रतिक्षा करऽ केँ क्रममे विवाहक वात कतेकवेर पक्का भभऽ कऽ टुटिजाइछनि । एक-डेढ वर्ष तक अमरके वाट तकिकऽ लैरकिक बाबुजी विवाहकऽ वात दोसर ठाम करैछथि मुदा ओ लैरकी अपन बाबुजीकेँ कहैय “बाबुजी, जौ हम विवाह करब त..................अमर सँ नहि त अहिना रहब । बल्कि हम अमरके प्रतिक्षा करब मञ्जुर अछि ।”

अपन संतान त केकरो भारी नहि होइछैक । बाबुजी किछ जवाव नहि देलाह । आ ओ अमरसँऽ विवाह करव कैहक प्रतिक्षा करऽ लगली ।

बिश वर्ष त बितगेलै मुदा बिभा अखनो अमरके संग होबऽबाला बिबाहक प्रतिक्षा करैय ।



d'dkmnL afnL

काठमाण्डूकेँ टुंडीखेलमे हम आ दुटा आओर हमर साथी बैसल छलहुँ । ताबते एकटा छौरी आबिकऽ हमरा सबके मुमफली खाएला कहलक । जेना मंगनीए दऽदेतै तहिना ओ हमरा आगुमे दु डिबा ममफली धऽ देलक । हम पाइकेँ लेल पुछली त बिस रुपैया कहलक । ममफली खाएवाक इच्छा त नहि, रहे मुदा साथी सबलग प्रतिष्ठाके देखकऽ जेबसँ पाइ निकालिकऽ दऽ देलहुँ । करीब एक-डेढ घण्टाक बाद ममफली खतम भऽ गेल त हमसब ओतऽ सँ उठिकऽ रौदमे वैसऽ चैल गेलहु । फेर, एकटा दोसर छौरी आबिकऽ कागज निकालिकऽ ममफली छोटका डिब्वा सँ एक डिब्वा धऽ देलकै । हमहुँ सब ममफली खाए लगलहुँ । ओ छौरी हमरा सवहक नजदिक बैसिकेँ गीत गाबऽ लागल “यो मायाको सागर.....।” हमर साथी ओकरा भऽगाब केँ लेल “तो बड सुन्दर गीत गवैछै” कह लगलैक । ई सुनिकऽ ओ छौरी कहैछै “एह, हम त........ गीते नहि नेपाली, हिन्दी, अंग्रेजी गीतमे डान्सो करैछी ।” फेर ओ अपन कुर्तीके उपरका बट्टम खोलिकऽ कहैय “आई कते गर्मी छै.........।” ई देखकऽ हमर साथी पुछलकै “एक दिनमे कते.......कमालैछही ।”
ओ ढिठेसँ जाबाव देलक “मुला जौ फसिगेल त........हजारो भऽ जाइए ।”
हम व्यंग करित कहलि “ तब त हम अपनो घरवालीके ममफलीके व्यपार कऽ देबै.....।”

फेर ओ कहली “आँहा सब तिन आदमी छि ....मात्र तिन सय रुपैया जँ खर्च करब तऽ आइ राति आँहा सब साथे हम चैल सकैत छि ।”
हम फेर व्यंग कैलिए “तोहर बाप कमाकऽ धऽ गेलछौ से......... ।”

ओ हसऽ लगली आ फेरु थेथरियाएल जका बसिगेली । हमरा त बुझले नहि छल जे ओकर ई व्यपार होतैक । आ ओकर पहिरन-ओढ्न सँऽ बुझाय परैक जेना ओ कानो सेठकेँ वेटी होतैक । हमर साथी रामबाबु अपन जेबमे हाथ दैत कहैय “हे यो......हमरा लग त दु सय टका अछि.......आँहा लग एक सय अछि त दिअनै पैचे सही.....।”

मुदा हम बड डटली ओ ओतऽ सँ उठिक तिनु आदमी भद्रकाली दने जाइत

रही। भद्रकाली मन्दिर सँऽ कनिकें आगु आवीक रामबाबु कहलनि “आँहा सब बढु ....हम एक आदमी सँ भेटने अवैछी।”

हम आ संजय त बुझिगेलहु कि ई कतऽ गेल होएत।

करिब एक महिना वाद जखन हम ओहि दकऽ जाइत रही त ओही छौरी पर नजरि परल ओकर कपडा फटल रहैक मुदा ठोह मे लाली बड. मोटसँऽ लगौने रहैक। आ जतेक आदमी ओइ दऽ कऽ जाइक सबके मुह पर तकै। ओही साँझमे हमर साथीरामबाबूकें फोन आयल आ कहलनि “हमर मोन खराब अछि।”

भोरमे हम ओकर डेरालग जाक ओकरा टिचिङ्ग अस्पताल जचाव लऽ गेलहु। डाक्टर बोखारक दवाइ दऽ पठादेलनि आ कहलनि जे एक हप्तावाद भेट करला। ओ, दवाइ खाइ, मुदा ओकर वोखार त ठिके नहि होइक। दिनदिने कमजोर भेल जाइक। फेर ओकरा लऽकऽ हम अस्पताल गेलहुँ। डाक्टर खुन, दिशा, पेशाब जचाबऽ लेल कहलनि। दिशा आ पिसाबक रिर्पोट तऽ तुरते दऽ देलक मुदा खुनक रिर्पोट ४२ दिनक वाद देबऽ कहलनि।

४२ दिन बाध हम रिर्पोट लऽकऽ डाक्टर लग गेलहुँ। वै दिन डाक्टर सब सँ अन्तमे हमरा बजौलनि। मितकेँ पकरिक डाक्टर लग लगेलियन। डाक्टर मित सँऽ पुछलनि “आहाँ बजारक लैरकी सँ..........सम्बन्ध रखैछी।”

किछ नहि बाजिकऽ ओ मुरी निचा कैने रहि गेलैक। आ, ई, सुनिक हम कहलियनि “डाक्टर साहेब,...................”

डाक्टर हमरा किछ बाजऽ नहि देलनि आ हमरा कहलनि कृपया बिचमे नई, बाजल करी।”

फेर डाक्टर आवेशमे आविक कहलनि “हिनका छैन एड्स लागीगेल।”

ओ पुनः हमरा पर ताकिक कहलनि “ओना त एड्सकैं इलाज त नहि छैक मुदा जौ संयम सँ रही त किछ दिन बाचि सकैछी। आँहा सब नयाँ उमेरक लरिका सब एना कर लगबै त कोना हेतैक।”

डाक्टर हाथमे कलम आ, आगामे सँ पुर्जी लैत कहलनि “देखु, आहाकैं चित बुझावलेल किछ दवाई लिख दैछि।”

डाक्टर पुर्जी हमरा हाथमे देलाह। आ हम सब ओतऽ सँऽ निकलँहु। हमर मित



त वड उदाश रहे भऽ गेल। ई देखक हम कहलियनि “चल वल्की गामे पर रहब।” तखन त ओ हमरा हँ कहलक मुदा जखन हम तैयारी भऽ ओकरा डेरामे पहुचलहु त देखलहुँ ओकरा खिरकी केवार चारु तर्फसँऽ लोक भरल। हमर मन धबरागेल। जखन हम नजदिक पहुचलहुँ त देखलहुँ एकटा हवलदार ओकरा गरदनिमे सँ डोरी खोलैतरहै। ओकरा शव बाहनमे धऽ कऽ अस्पताल लऽ गेलैक। आ हम ओकरा गामपर फोन कऽ कऽ ओकर बावुजीकँ खवर कऽ बजालेलियनि।





pbfz df]g

अपन प्रेमीकाकेँ कहलापर उमेश विना विवाह भेनेमे ओ वावुजी सँ भिन-भिनाउजक वात करऽ लगलनि। सन्तान जाहिसँ खुस रहे वोहीमे अपन खुसी बुझिकऽ बाबुजी सबकिछ मे सँ हिसा लगाकऽ उमेशके अपना नामपर कऽ दैछथि। सम्पती उमेशकेँ नामपर देखिकऽ उमेशकऽ प्रेमिका आशाकेँ ओ सम्पती पर लोभ भऽ जाइछैन। उमेश सऽ करिब १० वर्ष जेठ विधवा प्रेमिका उमेश सँ सम्बन्ध तखन वनबैय जखन ओ कक्षा नौ मे बढैत रहैक। एकदिन उमेशकऽ माँ विमार भऽगेली आ हुनका जचाबऽ लेल जखन उमेशकेँ बाबुजी पटना लजाइत रहैथ त अपन परोशी विधवा आशाकेँ कैहगेली जे उमेशके भोजन वनादेबऽ लेल जाही सँ उमेशके कोनो प्रकारक दिकत नहि होइन। आशा उमेशकेँ लेल बडशासन भोजन बनाक खुएलनि आ ओही अंगनामे सतएली। आ कनेक वेर बाध आशा से हो ओही पलंगपर आविकऽ सुतिरहली। रातिमे उमेशके ओ भैर पाजकऽ पकरली। उमेशकेँ [redacted]

दोसर दिन ई वात उमेशक दिमागपर नचैत रैह गेलैक। जे ई रातिमे डेरागेलनि कि केना ? कथिला ओ हमरा ओना पकरलनि ?" आ ई वात सोचैत उमेशके रातिमे निन सेहो नइ परैक। कर बदलवेरमे उमेशक हात आशाकऽ स्तन पर परिगेलैक। एतवेमे ओ उमेश दिश धुमिगेली। आ उमेशकेँ पैरपर अपन एकटा पैर धऽदेली फेरु ओ उमेशकेँ सहलाबऽ लगली आ............। फेर, ताही दिनसँ उमेशके आशाकेँ संग एकटा देहकेलेल गलत सम्बन्ध स्थापना भऽगेलैक। उमेशकें आशा सँऽप्रेम भऽगेलनि।

आ तहिया सँ सबदिन उमेश सब निक बेजाय आशाकेंसुनाबऽ लगलनि आ आशाकेँ कहलपर चलऽ लगलाह। आशाके कहैछलनि वोहे उमेश करैछलाह। आ उमेश अपन लक्ष्य तक आशाके बुझिलेने रहैथ। आ ओ ईहो सोचिलेने रहैथ जे जीब संगैह आ मरब संगैह।

जखन उमेशकऽ बाबजुी उमेशकेँ बखडा अदालत आ मालपोतमेँ जाक उमेशक

नामपर कऽ देलनि। तखन किछे दिन बाद उमेश अपन नाम बाला सारा सम्पत्ती आशाके नामपर कऽदेलनि। तकदिरक लिखल आशा उमेशसँऽ बिना पुछने नैहर चैलगेली ताँही सँऽ दुनु गोटाके एकआपसमे मनमोटाब भऽगेलनि। उमेशक उभ्फट बाली सुनि आशा हुनका सँऽ बाजब सेहो बन्द कऽ देलनि। ओ सोच आ चिन्तामे एहन भ गेला कि चञ्चल स्वभावके उमेशक मोन उदाश भ गेलनि।

उमेशकेँ ई दशा देखकऽ उमेशक बाबुजी आ माँ हुनका पुनः अपनालेलनि। भोरक भुतलायल जौ साँझक घर आबेतऽ ओकरा हेयायल नहि कहि बुझिक उमेशके निकसँ राखऽ लगलनि।उमेशके उदाश रहब देखिकऽ हुनक माँ आ बाबुजी सब हुनका विवाहकेँ वातचित कर लगलनि। विवाहकऽ नाम सुनिते उमेश आशाकेँ वारेमे अनेक वात सोचाए लगलनि। मुदा, उमेश विवाहक बारेमे कनेक देर सोचलनि आ सोचिक पुनः ई दिमागमे अएलनि जे "विवाह जौ कलिअ त आशा त हमरा धोखा देलनि मुदा हम ओकरा किया धोखा दिए।" ओ फेर सोचलनि हम जौ अखन विवाह कऽ लेब तऽ कल्हिखन जाकऽ हमर कनियाकऽ कोनो प्रकारक इच्छा जौ पुरा नहि कर सकबै त ओकरा मोनमे कतेक किसिमक वात अएतैक। ओ फेर ई सोचला जे "अपन हिस्सा सम्पती त हम बुरालेललहुँ आ बाँकी लेल......नहि बाबुजी कि सोच्ता ?" आ, ई वात सोचिक उमेश सब किछ छोरिकऽ सबहक माया मोह त्यागीक घर सँऽ बहुत दुर जाएकें सोचिकऽ चैलदेलाह।

जखन उमेश पटना स्टेशन पर पहुचलनि त आगुमे आशा ठाह-रहैक। उमेशकेँ देखक ओ हुनका आर नजदिक अएली आ कहलनि- "उमेश ! आहाँके मनमे होयत जे आहाँके हम बरबाद कऽदेलहुँ मुदा ई बाते नहि छैक। आउ आहाँके हम अशल बात सुनबैतछि ,आ बिना सुनने हम आहाँके एतऽ सँऽजाहू नहि देब।"

ई सुनिक उमेश बजलनि "आब सुनला ...कि बाँकी छैक से ?"

आशा उमेशके हाथ पकरिक कातमे लजाइछैक आ कहैछै "अहि के लेल ....आहाँके कने समय देबऽ परत।"

कनिक समय सोचैत उमेश कहलनि"– ठिक छै चलु कातमे।"

एकान्त ठाममे जाक दुनु बैसलनि तब आशा कहलनि "सुनु,.....हमरा एकटा परी सँ श्रापित भऽ ई मृत भुवनमे आबऽ परलअछि.....। हम एक दिन गगन–विहार

भऽ स्वर्ग जातिरही । बाटमे सपन नामक ऋषि कमण्डलमे जल लऽकऽ पुजा करला जातिरहैथ। हम ऋषिके खौझाव लेल बाटपर आबिकऽ ठाह्र भऽ गेलहु आ ऋषीके आखि पर ताकऽ लगलहुँ। हम ऋषी पर आ ओ हमरा पर बहुते देर तक एक आपसमे तकैत र हिगेलहूँ। ऋषी हमरा नजदिक आबऽ लगलनि आ ओ हमरा नजदिक आविक छुबऽ चाहलनि। मुदा हम ऋषी सऽछलिगेलहुँ, आ ओ खसिपर



ला।" ई ऋषी आ परीक वात उमेशकँ सुनल नहि गेलनि आ ओ कहला "चुप,.....झुठफुस आ नौटकी कनेक कम बाजु बुझलहु कि नहि,......रे ई सत्ययुग, द्वापर आ त्रेता नहि न छैक ?"

मुदा आशा कऽ आँखि आइ सच वाजिरहलछैक ओ फेर कहली " त आहाँ खाली बात सुनिलिअ.......विश्वास करु या नहि करु आहाँ पर अछि। तखन ऋषी हमरा कमण्डलमे सँ पानि लऽ श्राप देलाह " जो, हम तोरा श्राप दैछिऔक कि तोरा स्वर्गक सुख त्यागीकऽ एकटा नहि वल्की दुँटा पुरुशके साथ सम्भोग कर परतौक। जे एकटा तोहर पती रहतौक आ देसर एकटा तोहर परोशके बच्चा।

ऋषी फेर कहलनि " ओ बच्चा जखन श्यान भऽ जतैक त तोरा द्वारा ओकर धन सम्पत्ती सबकिछ खतम भऽ जएतै आ जखन तोरा छोरिक ओ चैलजतौ तखन तोहर मृत्यु भऽ तोहर जीवन तृप्त भऽ जएतौ।" ऋषीक कुवचन सुनिकऽ हम निराश भऽ गेलहु। बड कनलहु।" आशा वजली।

ई वात सुनऽके इच्छामे आविकऽ उमेश वजलाह-"तव ....कि भेल ?"

उमेशक प्रश्नकँ जबाब दैत आशा कहली - " हम मृत भुवन अएलहु। आ नदिकातमे आमक गाछलग बसिकऽ सोचऽ लगलहु जे आब कि करु। नदी कातक गाममे एकटा नँया फूसक घर रहैक। हम अप्पन दिव्य शक्ति सँ ओकरा वारेमे देखलहु। हुनका सबकँ गाममे के ओ नहि चिन्हैत रंहनि। हम अप्पन मायाबी शक्ति सँ हुनका सबकँ मन वदलीकऽ आ एकटा बच्चकऽ रुपमे प्रवेश कैलहुँ। आ, ओ दुनु

गोटा हमरा अप्पन बेटी जका मानऽ लगलनि। गामक स्कुलसँ एस.एल.सी. पास कैलहु। आ तखन ओ सब हमरा कैम्पस मे पढला शहर पढादेलनि। मनोविज्ञानकँ ज्ञानी तऽ हम रहबे करी। हम मनोविज्ञान सँऽ स्नातक कैलहु आ कैम्पसेमे हुनका हमरा सँऽ प्रेम भऽगेलीन। हुनक माँ विमार रहवाक कारण सँ ओ दुईए महिना वितलाक वाद हमरा सँ विवाह कऽ लेलनी आ साल वितिते हुनक मृत्यु भऽ गेलनी ई त होबहे के रहैक। श्राप अहि प्रकारक रहैक। बहुत दिन बाद हमरा आहाँ सँ सम्वन्ध बनल। ऋषीकऽ बचन अनुसार आँहा बरबाद भऽ गेलहु।"

एतेक बाजिकऽ ओ चुप भऽ गली। ओ फेर कहली- "हमर समयक अन्त भऽ गेल अछि, मात्र दु दिन वाँकि अछि हमर मृत्युकँ।

ई वात त ओना किनको पचऽ बाला नहिरहैक। मृत्युकऽ नाम सुनिकऽ उमेश बजलाह ".............दु दिन मात्र वाँकी कोनाक ?"

"जँऽ आँहा पतियाए चाहैतछि त.........मात्र दु दिन हमरा संगे रैहजाउ।" आशा कहली। उमेश झुठाकँ नेङ्गराबकँ विचारमे ओ "ठिक छै" कहला।

उमेश त पहिलदिन बड निकजका आशाक सगं वितएलाह आ एकबेर फेर आशा ओ राति उमेशपर समर्पित कऽ देलनि। उमेशके वस आशाके देह सँ प्रेम रहैक जेना वझाएल। मुदा दोसर दिन उमेशकँ आशासँ डर लागऽ लगलनि। मुँहपर डर आ चिन्ता देखिक आशा बुझिगेली जे उमेशकँ पक्का हमर मृत्यु सँ डर लागिरहल छनि। आ, ई देखिक आशा उमेशकँ तखने ज्ञात करौलनि जे "काल्हिखन सूर्य जखन उदय भऽ जतएतैक तखने हमर समयकऽ अन्त भऽ जाएत।" जखन हुनका आशा मृत्युक समयके बारेमे ज्ञात करौलनि तखन जाकऽ हुनका मोनमे संतोष भेलनि।

आ, आई राति आशा आ उमेश दुनुगोटा मे सँ किनको निन नहि परिलनि। राति भरि ओ दुनु बितल समय, आ साथे बितल राति सबकँ वारेमे बतीयाति रहिगेलाह। जखन भोरकँ पाँच बजलैक ओ जल्दीसँ जाकऽ नहाएली आ उमेशकँ कहली- "दुनियामे आठटा मात्र चिरंजीवी पुरुश छथि। जै मे सँ हनुमानजी से हो छथि। हम हनुमान मन्दिर जाइतछी। आहाँ हमरा गेलाकऽ ठिक आधा घण्टाकऽ बाद मन्दिर तर्फ आएब।"

ई सुनिकऽ उमेश लाशकेँ बारेमे पुछ्ला ।हुनका सम्भावित आशा कहली “ओ अपने जरि जएतै” बड अबेर भेल जाइत रहैक । ओ जल्दी सँ निकली । किछ समय बाद ओ एकवेर फेर आविक कहलनि-

“उमेश भगवान अहाकेँ कल्याण करौथ ।”

उमेशकेँ हुनक बात पर अखनो विश्वास नहि भेलनि ओ आधा घण्टा सँ पहिनही ओतऽ सँऽ निकललनि । जखन हनुमान मन्दिर लग पहुचलाह तँ लोक सवहक बाहरमे भिर लागल रहैक । एकटा आदमी सँ उमेश पुछ्ला जे कि भेलैय ? ओ आदमी बडा उदाश भऽ कहलनि जे मन्दिरमे सँ दर्शन कऽकऽ निकलिते अपनेमने देहमे आगि लागि गेलन । ई सुनिक उमेश लोक सवहक भिरमे पसिक देखलनि त ओत मात्र छाउर बाँकी रहैक। उमेशक मोनमे एकटा अलग उदाशी पकरिललकनि ।



[redacted] घर आपस चलिअएलाह । ओ अखनो कतौ बसिकऽ मौन रहैछथि ।



l;kflx

“लोक कि कहैत होयत बेटीकेँ जे दुरागमण भेल एक वर्ष भगेलै मुदा नैहर सँ केहो नहि गेलै । एकटा वेटा अछियो त देशक भक्त । हमर बेटियो कि सोचैत होयत ।” ई वात सन्तोषक माँ सोचिते रहैछैक ताबते सन्तोष हातसँ भोरा निचा रखैत पैर छुबैय । सन्तोषक मा ओकरा मुँहपर ताकिक कहैछ “बौआ रे........... तोरे बारेमे सोचैछलहु ।”

ई सुनिकऽ सन्तोष हसऽ लगैय आ कहैय “एह, तहुँ कि नहि ....।”

एते बजीते सन्तोष अपन माँ के आँखिमे नोइ देखैय आ बातपर ध्यान नहि दैत कहैय “अच्छा, माँ ..... चल हमरा बड भुख लागिगेलअछि ।”

माँ भितर जाकऽ जाबें नास्ता लबैक । ताबे सन्तोष कलपर जाकऽ हाथपरि धोकऽ बैसैय । माँ चुरा आ दही लऽकऽ सन्तोषके दै छथि आ ओ खायलगैय । माँ सेहो सन्तोषक कातमे बसिजाइय आ कहैय “हो, तहुँ निके समयपर अएलेह..... काल्हिखन सुकुरातिछै......तो एतऽ सँ परसु भोजन कैलाक वाद बहिन गाम जाकऽ नौत लेबऽ चलिजो ।”

बहिनगाम जाएबाक नामपर सन्तोष खुस होइय आ सोचऽ लगैय अपन ओभाक पिसियौत बहिनके बारेमे जे दुरागमणमे भेटलरहैक । ओना दुनुके टोका चाली त भेल नइरहैक मुदा ताकाताकी खुब भेलरहैक । ओ रहबो करै एते सून्दर जे किनका नहि एकबेर नजरि पैरजाई त बेर बेर देखऽ चाहितै ।

सुकराति बड निकजका मनौलनि । आ प्रातः भोजन कऽकऽ सन्तोष बहिनगाम जएवाकलेल तैयार भेला । माँ एकटा चंगेरीमे किछ खजुरिया, किछ पिरीकिया, आर कि-की धक एक चंगेरी पुरा दैछथी । चंगेरी उठाबके चलते सन्तोष कहैछ “एह, कि ध देलही.........हम ओहरे मिठाई ललितिऐ ।”

ई छिछ कटनाई देखक माँ कहैछथी “हमरा ई सोचिकऽ दुःख लागल ....जे सब सिपाही छिछकट किया भजाइछ ।”

सिपाहीके बारेमे एहन वात सुनिकऽ सन्तोष जल्दि सँ हाथमे चंगेरी उठबैय आ

चलिदैय । बाटमे सैनिक बसके चेक (तलाश) करैतरहैछैक । ताही तलाशक क्रममे सन्तोषक जेबसँ एकटा बन्दुकक गोलीकेँ खोका भेटैछनि । सन्तोषकें बसमेसँऽ उतारिक सैनिक सब लजाइछनि पुछताछ कर । ओमहर बसक खलासी हुनक समान निचा उतारिकऽ चलिजाइत छैन । जखन सन्तोषसँ पुछैछनि काजमे बारमे तखन हुनका अपना बारेमे कहवाक मौका भेटैछनि आ कहैछनि “हम अहि देशक सिपाहीमे असई छि........आ ई खोका त आतंकवादीसँ जे द्वन्द भेल छलै ताही वेरके छै ।” एते वात कहीकऽ ओ अपन परिचय-पत्र देखबैछथि । परिचय-पत्र देखला बाद सैनिक सब हुनका छोरैछनि । बसक समय सेहो समाप्त भगेल रहैछनि । ताहीसँ हुनका चंगेरी माथपर धऽकऽ दु कोष चल परैछनि । अन्हरिया राति, कच्ची सडक भसन्तोष रातिकेँ करिब ९ बजे वहिनगाम पहुँचैछथि ।

रातिमे सबगोटे भोजन कऽकऽ आराममे चलि गेलरहैछथि । सन्तोषके देखकऽ बहिन बड खुस होई छथी कियाकि हुनको सुनऽ परल रहैछनि “एक शाल होब लगलै आ नैहर सँ केओ नहि अएलै “ओ पुनः भोजन बनाक हुनका खुअबैछनि । भोरमे मिन्टु प्रातः काल उठिक नित क्रियामे चैलजाइछथि । नित क्रियाक वाद जखन सन्तोष स्नान करलेल बाल्टीन लऽकऽ दलानबाला कलपर पहुँचैछथ त देखैछथि अपन ओझाक पिसियौत बहिनकें कपडा खिचैत । झुलि-झुलिक जे कपडा खिचऽकें क्रममे हुनक ओढनी निचा गिरपरल जाही कारणसँ हुनक गोर आ शिकार करला तानल बन्दुक सनक स्तनपर नजरि परैछनि । मिन्टुक नजरि ओही सुन्दर स्तनपरसँ हटिते नहि रहैछनि । आ कन्या विना केमहरो तकैत मात्र उपन कपडा खिचऽ पर ध्यान देनेछथि । कपडा धोब केँ क्रममे जखन ओ कन्या दोसर कपडा बाल्टीनमे सँ निकालैछथि देखैछथि सन्तोषकेँ । हुनका देखिते ओ जल्दीसँ अपन ओढनी सरियबैत कहैछथि “पाहुन, ...नहाय अएलहु ?”

प्रश्न सुनिते मिन्टु कन्याक मुहपर तकित घबराएल जका कहैछथि “....एह, हँ, हँ ।”

“ठिक छै पहिने आहाँ नहालिअ तखन हम कपडा खिचब ।” एते कहिक ओ आँगनदिश चलिजाइए । सन्तोष नहेलाक वाद जखन आँगन पहुचैय त ओ कन्या सन्तोषक बहिन लग बैसल रहैछथि । सन्तोषकेँ ओतऽ देखिक ओ कन्या पुनः कपडा

धोब चलिजाइत अछि । कन्याक गेलाबाद सन्तोष अपन बहिनसँ पुछैछथि “ई के छै,....... गे बहिन ?”

बहिन हसिकऽ जबाब दैछथि “ई तोरे ओझाक पिसियौत बहिन कञ्चन ।”

नाम सुनिक सन्तोष बजैछथि “बाह ! एकर मुहसँ सुन्दर त .....एकर नाम छैक ।”

बहिन हसऽ लगैय । सन्तोष पुनः अपना बहिनके आगंनमे देखाक कहैछथि “जा, अखन तक आगंनमे अहिपन सेहो नहि देलही ।”

बहिन बड खेखैनक कहैछथि “कनिके देर रुकिजोन ....कि ....?”

“हेतै !” कहिकऽ सन्तोष अशोरापर धएल कुर्शीपर बसिजाइछथि ।

कनिए समयक वाद कञ्चन पुनः आगंनमे अबैछथि हाथमे भिजल कपडा सँ भरल बाल्टीन आ दोसर हाथमे साबुन रहैछनि । सन्तोष पुनः कञ्चनपर ताक लागैछथि । मुदा कञ्चन के अपन काज सँ मतलब छैन । ओ असगनि पर कपडा पसारिरहल छथि । सन्तोष विचारैत रहैछथि जे कखन कञ्जनसँ परिचय करि । ताबते एकटा बुढिया कञ्चन के अढादैछनि आगंनमे अहिपन धरला । कञ्चन अहिपन धर लगैछथि । ओना त कञ्चन सेहो सन्तोष पर तकित रहैछथि मुदा एहि किसिमसँ जे केओ बुझ नहि सकैन ।

रातिमे भोजन करला कञ्चन सन्तोषके बजाबऽ दलानपर पहुचैछथि । सन्तोष दलानपर लालटेमकेँ टिमटिमाइत इजोतमे उपन्यास पढैतरहैछथि । पैरके पायलक आवाज सुनिते सन्तोष उपन्यास छोरिक बाहर तकैय । आ, कञ्चनकेँ देखिते ओ पूनः मुरी गोतिकऽ पढऽलगैय । कञ्चन नजदिक आविक कहैछथि “पाहुन............ चलु भोजन करऽ ।”

उपन्यासपर तकिते सन्तोष कहैय “कनिए देर रुकुने......., कनिए बाँकी छै ।”

कञ्चन ई सुनिकऽ सन्तोषक दहिनाकात बैसजाइय । कञ्चनके वैसितदेखिकँ सन्तोष मोनमोने बड खुशी होइय आ सोचैय कि आबो जरुरे बात करबाक मौका भेटत ।

कञ्चन पुनः पुछैय “अच्छा, पाहुन ....कोन उपन्यास अछि ?”

“ई सुस्मीता उपन्यास के नेपाली अनुवाद छै ।”

ओ पुनः पुछैछथि “आहाँक नाम कि अछि,.... पाहुन ?”

"हमर नाम आहाँके बुझल ह्यात ।"
"नहि, कहुने ।"
"हमर नाम सन्तोष कुमार झा अछि ।"
"आ शिक्षा ?"
"छोरु, शिक्षा बड कम अछि ।"
"कहुने"
"हम स्नातक प्रथम वर्षमें नामांकन कराक छोरिदेलहु ।"
कञ्चन फटाफट प्रश्न कएनेजारहलअछि मुदा सन्तोष प्रश्न करऽबाक हिम्मत जुटाक व्यंग करैत पुछैछथि "ओना ....आहाँक नाम कि अछि, कञ्चनजी ?"
"हमर नाम............।" एतबे कहिते कञ्चन चुप भऽ जाइछ ।
आ दुनुगोटे हसऽ लगैय । तखन फेर सन्तोष आ ओ दुनु आंगन तर्फ प्रस्थान करैतअछि । सन्तोष भोजन करऽ ला बैसैय । ओत, कत्रचन, ओकर माँ आ सन्तोषक दिदी सेहो बैसल रहैछथि । कञ्चनकैं माँ बजैछथि "कि करबै [redacted] मुदा...।"

मिन्टु कोनो प्रकारक प्रतिक्रिया नहि व्यक्त करैछथि । आ ओ चुप चाप मुरी निहुराक भोजन कऽरहल छथि । ताबते बुढी पुनः पुछैछनि "पाहुन, आहाँक विवाह त.......अखन नहि भेल होएत ?"

एते सुनिते सन्तोषके वाजसँ पहिनही हुनक बहिन कहैछथि "नहि त ...... मुदा आब त कर परतै .... गाँमपर मा असगर भ जाइछथि ।"

सन्तोष भोजन कऽकऽ आराम कर दलानपर चलिजाइछथि । रातिमे सन्तोषक बारेमे कञ्चनक माँ सब किछ पुछैछथी मुदा ओ ई त पुछबेनहि करैछथि कि मिन्टु कोन काज करैछथि । सब किछ पुछलाक वाद बड गम्भीरता पूर्वक ओ सन्तोषक बहीनसँ कहैछथि "ए कनिया.......जौ आँहा पाहुन सँ कञ्चनियाकैं विवाह कर बादितहु त बड गुन होएत । जे जेना तिलक गनऽ परतैक हम त गनबेकरबैक ।"

कञ्चन अपन विवाहक बारेमे सुनिकऽ खुशी होइय आ ओ रातिमे मिन्टुके बारेमे सपना से हो देखैय ।

भोरमे सन्तोष अपन गामला तैयार होइए मुदा हुनक बहीन एकदिन रहला

आदर करैछनि ।" गामपर छठि सेहो मनाबऽके अछि" कहिक वातकँ टारैत सन्तोष अपन झोरा लऽकऽ निकलैय । कञ्चन हुनका अरियातऽ लेल हातसँ झोरा लक आगुबढैय । दलान सँ कनिक आगु गेलाक वाद कञ्चन गम्भिरता पूर्वक सन्तोषके कहैय -
"आब अपना दुनुकैं कहिया भेट होएत ?"
कञ्चनके आखि जे कहैत रहैछै से ओकर मुह कैह नहि पबैय । प्रश्न सुनिक मिन्टु कहैय "देखु ! भगवान कहिया भेट कराब चाहैय ।"
कनिक देरतक दुनु चुप्पे चलैत रहैय । तब फेर कञ्चन कहैछथि "छठिके बाद माँ कहैछलथिन ....जे बाबुजी आँहाक गाम जएता ।"
"ठिके छै हम प्रतिक्षा करबनि ।"
कनि आगु चलिक कञ्चन रुकैय आ कहैय "आब आँहा जाउँ ......हम एतै सँ विदा होइछि ।"
सन्तोष कनेक मुसैक क कञ्चनके हातसँ झोरा लैय । दुनु एक आपसमे आगु बढैत पाछु तकैत अपन-अपन दिशातर्फ चलैय ।

कञ्चनकैं मा जखन ओकर बाबुजीलग विवाहक चर्चा करैछथि त बाबुजी सेहो सहमति जनबैछथि । ओना हुनको इच्छा रहैछनि जे बेटीक विवाह नेपालमे करी । ओ पुरा तैयारी भऽ असगरे नेपालक सलार्ही जिल्लाक खैरवा गाम पहुँचैछथि ।

बाटमे एक आदमी माथपर धानक बोझा लऽकऽ अवैत रहैछथि । ओ आदमी आर केओ नहि सन्तोष अपने रैछथि । सन्तोषके रोकिक ओ पुछैछथि "हे यौ भाइसाहेब .....सन्तोष झा क घर कोन थिक ?"
सन्तोष झा हुनकापर ताकिक कहैछथि "चलु हमरा साथ,......कनिके आगा छैक ।"
दुनु गोटा चुप्पेचापे कनिक आगुतक चलैय आ पुनः कञ्चनके बाबुजी पुछैछथि "अच्छा, ...कतेक हुनका जमिन जथ्था होतै ?"
"इहे करिब ३ विग्घा जते छैक ।"
कने सोचल जका करैत कहैत छथि "ए् ... आ सन्तोष कोन काज करैय ।"
"ओ सिपाहीके असइ छथि ।"
ओना त ओ असइक अर्थ नहि बुझलनि मुदा सिपाहीक अर्थ बुझिगेलाह । आ

सिपाहीक नाम सुनिते ओ रुकिक कहलनि “भाई साहेब, अपने चललजाय ....हम अबित छि ।”

माथपर धानक बोभ्का भएने सन्तोष इहो नहि कहऽ सकलनि कि सन्तोष ओहे छथि । कञ्चनके बाबुजी ओतै सँ अपन घर फिर्ता भऽ जाइछथि । गाम पहुचक निराश भ बसिजाइछथि । कञ्चन बाबुजीक देखक काकाक अगनासँ माँ के बजाब जाइछथि । माँ जल्दिसँ अबिक कञ्चनकें बाबुजी सँ पुछैछथि “कि भेल वात पटल कि नहि ।”

ई सुनिते कञ्चनकें बाबुजी अवेशमे आबिजाइछथि आ कहैछथि “जखन भोर खनक रेडियो खोलैछि त समाचार मे नेपालके वारेमे सब दिन एकहिटा वात सुनैछि फल्ना ठाम माओवादी सिपाहीके द्वन्द भेलैक । फल्ना ठाम ५० टा, साठिटा सिपाही मरिगेलैक । फल्ना ठामक चैकीमे बम फेक देलकै । मतलब अखन कें समयमे सिपाहीकें माँ कखन निपुत्र भऽ जाएत सिपाहीक कनिया कखन विधवा भजाएत कोनो ठेकान नहि ।”

ओ पित्त सँ थुक घोट लगैछथि, आँखिमे नोर भैर जाइछनि आ मन्द स्वरमे पुनः कहैछथि -

“ए, कञ्चनके माँ ! एतेक सम्पत्ति अछि, एते सुन्दर बेटी, कोनो हम अपन बेटी सँ स्नेह नहि करैछी हम बेटी के निक ठाम विवाह करब मुदा नेपालक सिपाही सँ नहि करब ।”

बाबुजीक एहन बात सुनिकऽ कञ्चन दु-तिन दिन तक खान-पिअन व्यागिक बैसिजाइय । कञ्चनके माँ ई वात हुनक बाबुजीकैं सुनबैछनि त ओ बड हुनका सम्भ्कबैत छथि मुदा कञ्चन त वात बुभ्क्बेनहि करैछथि । ओ मात्र एते कहैछथि “प्रित त किछ नहि देखैछैक ।” ओ बड जीद करऽ लगैछथि त हुनक बाबुजी पुनः सन्तोषक घर जाएवाक लेल तैयार होइछथि । ओ पुनः सन्तोषक गाम पहुँचैछथि । ओ जखन सन्तोषक दलान पर पहचैछथि त सन्तोष खह्र लऽकऽ वैललग जाइत रहै छथि । कञ्चनके बाबुजी सन्तोषके कहैछथि “सुनलजाय ।”

सन्तोष हाथमे पोवार लेनहि रुकैछथि ओ हुनकापर ताकीक कहैछथि “जी कहलजाय, ...हम कि सेवा क सकैछि ?”

“अपने सन्तोषजी, छि कि ?”

“जी ! मुदा अपने ?”

“हमर घर हाटी, हम कञ्चनकें.......बाबुजी ।”

सन्तोष खह्र आतै छोरिकऽ हुनक नजदिक अबैछथि आ जल्दी सँ पैर छुक प्रणाम करैत हात पकरिकऽ भितर बैसाबऽ लजाइछथि । सन्तोष आँगन जाँक पाहुनके बारेमे अपन माँ के कहैय । माँ जलपान आदी बनाबमे लागिजाइछथि । माँ पाहुनके लेल जखन जलपान लऽकऽ अबैछथि त जलपान खाति ओ सन्तोष माँके सुनाकऽ कहैछथि- “हम त सन्तोषक घटक बनिकऽ अएलहु ।”

ई वात सुनिते सन्तोषक मुरी निचा निहुर जाइछनि आ ओ भितरे भितर एते खुस भऽ जाइछथि जैके केओ नापिनहि सकैय आ ओइके केओ लेखक लिख नहि सकैय ओ पुनः कहलाह -

“अपने सब जे किछ कहब हम दऽ देव मुदा एकटा आग्रह जे सन्तोषजी के सिपाही क नोकरी छोरऽ परतनि बरु ओ गाममे बसिक व्यापार आदी करौथ ।” नोकरी छोरऽ के नाम सुनिते सन्तोष सोच लगैछनि

“वाफरे ! जौ एहने सब व्यक्ति भऽ जाइ त देशके कि हालत हेतैक, कि हालत होतै ?”



czn lvnf8L

एकटा देशमे कोचर नामक जादुगर रहे । कोचरकें जादुबाला चमत्कारी शक्तिकें देखकऽ गामक लोक हुनक प्रशंशक बनिगेल रहै । एकदिन कोचर सपनामे एकटा तलवार देखलनि जाहि तलबारमे एकटा अलौकिक शक्ति रहैछ । तलबार प्राप्त करै वाला व्यक्तिके कोनो प्रकारक इच्छा पूर्ण भऽ सकैत अछि । आब, कोचर ओही तलबारके पत्ता लगाबऽ लेलअपन प्रत्येक शक्ति लगादैछैक । अन्ततः ओ एकटा उपाय निकालैय जे ई तलवार राजा गोपाल सिंहक संग्राहालयमे राखलगेल अछि । ओइ तलवारक सुरक्षाके लेल अनेक प्रकार व्यवस्था कएलगेल अछि। आ, ई तलवार एकहि आदमी लाबि सकैय जेकर नाम सरोज खिलाडी थिक ।



[redacted] सुनौलनि । खिलाडी ओ तलबार जेनाक होई लाबऽकें लेल मनमे अठोट कैलनि । खिलाडी जखन सब किछ पार कऽ कऽ तलवार वाला कोठरीमे पहुचला त हुनका आगि, पानि आ पाथरि सवकिछ क सामना कऽरऽ परलनि । खिलाडी सामना करैत ओ तलवार प्राप्त कैलाह । जखन ओतऽ सँऽ ओ बाहर निकललनि त ओ एकटा चक्रव्यूहमे फसिगेलाह । निकलऽ कें लेल जखन ओ अकक्ष भऽ गेला तऽ ओतै माथ पर हाथ धऽ कऽ बसिगेलाह । खिलाडी अपन ईच्छा अनुसार रुप बदलिसकैय । मुदा तैंयो निराश भेलाक कारण सँऽ तलवारके भित्तर सँ एकटा चमत्कारी बालक निकललनि आ पुछलनि–

“हे खिलाडी जी ! हम आहाँके कि सेवा कऽ सकैछि ?”

एकाएक एहन आवाज सुनिक खिलाडी उपर देखलनि त एकटा शुन्दर बालक नजरि परलनि बालक के देखिकऽ खिलाडी पुछलनि -

“अपने के छि ?”

“हम त आहाँक दाशछि । आज्ञा कएल जाँए ।”

बालकके एहन नम्रता भरल आवाज सुनिक खिलाडी कहलनि “हम एतऽ सँऽ निकल चाहैत छि ।” एते मात्र बजिते खिलाडी बाहर निकलि गेलाह आ ओ बालक लोप भऽ गेल ।

तलवार लकऽ खिलाडी कोचरकें घर नहि गेला । ओ सिधा अपन घर पहुँचलनि । ओतऽ खिलाडीक माँ आ बाबुजी तिन दिन सँऽ भोजन नहि कैने रहैथ । जखन खिलाडी पहुचला त हुनको बड जोर सँऽ मुख लागल रहनि । सव गोटा चिन्तामे परल रहैथ । तखने फेर ओ चमत्कारी बालक आएला आ एकटा चौकी पर खुब निकजका सजाओल पकमानक थारी खिलाडीक सेवामे हाजीर कैलाह ।

एवं प्रकारके जते वातमे हुनका कोनो प्रकारक दिकत होयन त ओ चमत्कारी बालक आविक पुरा कऽ दै । एक दिन खिलाडीक घरक बाट दने एकटा राजकुमारी जातिरहैछैक । ओ राजकुमारी के देखकऽ खिलाडी मोहित भऽ जाइछ आ मनमे अहि राजकुमारी सँ विवाह करऽ कें वात सोचैय । राजकुमारीके देखला वाद खिलाडीक मोनमे एकटा अलग बेचैनी अबैछ ओ जखन तखन मात्र राजकुमारीके बारेमे सोचऽ लगैय । खिलाडी कें सोच मे परल देखिकऽ तलवारवाला चमत्कारी बालक पुनः उपस्थित होइय आ खिलाडीके लेल खुब शुन्दर गहना जेवर सँऽ भरल घर बनादैछ । खिलाडीक बाबुजी खुब बहुते गहना-जेवर लऽ कऽ राजकुमारीक हाथ मांग करऽ लेल तयारी से हो भऽ जाइछ । विवाह से हो बड निकजका सम्पन्न होइछैक ।

समय एतेक बितला बादो कोचर पिताएले छैक । आ ओ खिलाडीक पत्ता लगाबलेल अनेक प्रकारक बिधाके प्रयोग कऽरहल छैक । बहुतो बिधाक प्रयोग कएलाक बाद ओ खिलाडीक पत्ता लगाबमे सफल भेला । तखन ओ खिलाडीक घर लग एकटा छिट्ठीमे बहुते तलवार लऽकऽ पहुचल आ हल्ला करऽ लागल “पुरान एकटा तलबारके नयाँ दुटा तलबार । “ई बात खिलाडीक माँक कान तक गेलै ओ घरमेका जाँदू बाला तलबार लऽकऽ नयाँ तलबार लेबऽ पहुचैछथी ।

कोचरके हाथमे तलबार पैरते कोचर ओतऽ सब तलबार छोरिकऽ गायब

भऽजाइय। घरसँऽ तलबार के जाइते खिलाडी पुनः पहिलके स्थितीमे पहुचजाईय। आहे पुरान घर, भोजन करऽमे दिकत आदी।

खिलाडी अपना इक्षानुसार रुप बदलके क्रममे ओ एक दिन कोचरके कनिया बनिकऽ हुनक घरमे पैसलनि। कनियाके देखते कोचर मदिरा देबऽला कहलनि। खिलाडी मदिरा संगैह किछ आर मिलाक कोचरकें पिया देलनि। कोचर बेहोश भऽगेल आ खिलाडी अपन तलबारके खोजमे लागल। तलबार बहुत खोजला बाद भेटलनि।

बादमे खिलाडी एहन ढंग सँ ओ तलबारके रखलनि जैके केओ देख नहि सकैय।







